

श्री उमाधाम भूषित गोपनीया।

पिता बोगाभ्यासो विद्यविरतिः सा च जननी ।
 विवेकः सोदर्यः प्रसिद्धिनमनीहा च रगिनी ॥
 प्रिया क्षाति: पुत्रो विनय उपकारः प्रियसुहृत् ।
 सहायो वैराग्यं युहसुपदामो यस्य स सुखी ॥ १ ॥

पुस्तक ३३ रु.] आर्थिन. संचयत १९७३. वीरसंचयत २४४३. [अंक ३ भे.

कलाना मोटे भागे वपराशामो आवता अक्षरोने लाल अबुसरुं रादनी आदिमां एज
 अक्षर दर्शनिक
 बोधवायक अष्टक。

स्वैया-चौक्षिकिणा।

डेल क्तरार इरी क्षेत्र काला, १५८ डेलवे डेने काल,
 आतरतुं आतां जेणे आग, आतेशी आटेकुं आग;
 शुशुनी गणुना शुशुयक शृङ्खलां, शुशुथाई गेह गणाट,
 धुंचवाय घडतो घटभाँडे, वेळा वेळा वेळा धाट. १
 चम्कटी चपणाना चक्षु, मूळवे चेतन चतुराइ,
 छानामां छानी छेतरती, छंछेडेली छणानी^१ छांड;
 जर जमीन लेड झुकावत, जगमां ले जमेवी जाण,
 जाणे छे जाजी अभनाच्चो, जाणे छे जाजा छंआग. २
 टगभग टगभग^२ टेक्केलान्ते, टेगामां टेके इट्टार;
 हुक्काई हडिं इर्वाना, डोहानेपै डेक्के हगनार;
 इरनारा तो इरे डेगथी, डेगवालु उंडाये डेणा,
 ढण्डे ढण्डे ढगनारा होडो^३ हगवाना डाण्डे^४ हडाहार. ३

^१ कपटनी. ^२ पहाना आभउता. ^३ चारेका ते. ^४ अक्षु थाने. ^५ अरानीने.
^६ डेणा भावमां. ^७ लगाई जेवा. ^८ रस्ता. ^९ तपासिनो.

५८.

कोबालिर्थ

तुम्हारा तरट तरज तंतीदा, तन्यपरायण तारे तार,
आईनी^{१०} वस्त्रहस्तारे^{११} थोड़े, शोधाने घोथामारे^{१२} थोड़ा;
होम हुआ डिततुं गाँड़े तो, ठगता हांच्चर हठी दाम,
थर्हि थान धरतारा धस्तो, धरणीमारे^{१३} धारेहुं धाम^{१४}. ४

नीतिवान निपूजु नर नवता, नामांडितो नम्र निहाण,
पटे खान खाकी पीपणा, पठतारा खापी खतण;
झारी झर्णी कुशाता है है, इत्तोमां हैरानी^{१५} हाण,
भूरामां भूरी गूराई, अनावट भुक्ति अणधी भाण. ५

लभवाना^{१६} लयने भुंसावा, लक्षित लदी लक्ष्ये लगवांत,
गोडु-भमत मायानी भडोगत. भुद्धिधवमं भूडे भतिवंत^{१७};
थरभाने यरभान यारथ्या, यमनी याहिना यरभान^{१८};
रथवहता राणी रथवाणी, दाय रंड रेणाता रान. ६

लवथाना लांचा लेवामां, कोभीना लासो हुंटाय,
विनय विवेक वधाए निधा, विश्व विमे विधा वथथाय;
शरभाये शाने श्रोभीका, शिक्षणुमां शिआभणु शीअ,
सारासार समज्जता साचा, मुख्यां सुधृष्टे सांकाहिक^{१९}. ७

हुदी हेम हेतुतुं हरामी, हुंसतमां हुरे छे हित,
अज्ञाने आथता आणो, आर्द्धा अवनिमां अविनित;
उपयोगी उपयोग उतारि, उमदा उरमांहु उमराव, २०
हुर्क्केल डिस दाखे छे दाखे, ठमनारा हुआना ढेपाव. ८

हुर्क्केल^{२१} वि= गुदाथयां ह अहेता-वणा.



१० डारीने. ११ डुकता हुन्नता. १२ विनाशी पुडगवमां. १३ पुडगवमां. १४ चारेहुं वास-शावत अहाय ऐसत्तयान. १५ संसारायडमां हुन्नती. १६ अनांताकाश अ-ममाश
ही लवक्षनाश करताता. १७ हुडिशाली याती पुडेण. १८ यांत्यामो नेहायता यरभाने
आरमानो यसती याहिनाश यरभानो छे, येहेते यांत्याम विनांरें छे, क्षयम हुक्कतो न नी.
१९ संसारी अचा. २० अरेखी भतव्य उमदा अंतःकरणमां उमरावे अ उनारे छे अने
अंतःकरण ने उमराव गश्युम के.

ग्रन्थसंक्षेपम्

१८५

अद्याहरति अकरण.

वार्थो विवेचन सुकृत.

(केषड—सन्मित्र अपूर्वविजयथ)

सन्तुष्टसंघात ४४-१७३ श्री,

इवं शास्त्राद्वयाणि समुद्घातनो विधि-मर्यादा अतावे छः—

दण्डं पथमे समये क्याटमय चोतरे तथा समये ।

मन्यानमय रुतीये लोकव्यापि चतुर्थे तु ॥ २७३ ॥

संहरति पञ्चम त्वन्तराणि मन्यानमय पुनः पष्टे ।

सप्तमके तु कपाठं संहरति ततो षष्ठ्ये दण्डम् ॥ २७४ ॥

वार्थ—पेढ़वे समये दण्ड, बीचे समये क्याट, बीचे समये भयान करे छे, बीचे समये दोऽन्याणी थाय छे, पांचमे समये आंतरा, छहे समये भयान, चातमे समये कपाठ अने आँडमे समये ते हँडने उपसंहरे छे. १७३-१७४

लावार्थ—प्रथम समये दण्ड करे एटवे द्वं शरीर प्रभाषु लाया अने दोऽन्यान्त सुधी खेड़वे व्यवडा व्यर्थात् चैद राजवेक प्रभाषु लांगो आत्म-प्रदेशनो दण्ड करे एटवे दोऽन्यान्त सुधी उच्चा अने नीचा आत्मप्रदेशो ने विस्तारे; बीचे समये तेनो क्याट करे एटवे दक्षिण्य अने उत्तर दिशे दोऽन्यान्त सुधी आत्मप्रदेशो ने विस्तारे; ए दीते त्रीज समये तेज कपाठने मन्यान इरे एटवे पूर्व अने पञ्चम दिशे दोऽन्यान्त पर्यन्त त्वप्रदेशो ने विस्तारे; एयो दीते व्यापा समये मन्याननां आंतरा खूनी दोऽन्याणी थाय. आ प्रभाषु अब उपर्युक्त आत्मप्रदेशो व्यभित्र अक्षांड (संपूर्ण दोऽन्य) मां विस्तारीने ते देवय ज्ञानी बगरान्त वेदनीयादिक व्रषु कर्मने आशुष्य समान इरे एटवे अवशिष्य आँडमा साथेज वेही देवय अनें अतावे, त्वप्रायुष्यनु ते अप-वर्तन थतुं नथी, तेथाज सेम कछु छे ते फेते उक्त उपकम करीने वेदनीयादिक कर्म ने वधारानु छेय ते अपावे. उपर ज्ञान्या सुन्न यार समये वडे अतुडमे आपा दोऽन्याणी व्यापी ज्ञ पाठा आरक्ष समयवडेतेन संहरी देवय छेते आ प्रभाषु-पांचमे समये मन्याननां आंतरा संहरे छे; अहा समये भयानने संहरे छे; सातमे समये कपाठने संहरे छे अने आँडमे समये दण्डने चंडरी शरीरस्थ-शरीरभांज स्थितिवाणा थाय छे. २७३-२७४

२७५) ३४८

ज्ञानुवाचा । जागे अथ नमस्ते कुषेण । द्वयं गोप्य ते हृषे भद्रावे उः ॥

ज्ञानुरेकदोन्ना यज्ञाप्राप्यस्तद्बोत्सादिष्टः ।

विद्यांशौकिर्मीत्ता लक्ष्मद्वृत्तिंविषु ॥ २७६ ॥

ज्ञानुपल्लीर्योगी चतुर्थेकं पश्चके तृतीये च ।

भगवन्नवेष्टि तस्मिन्नु भद्रत्यनावारको नियमात् ॥ २७७ ॥

अर्थ—पहुँचे अने आठमा समयने विषे औदारीक शरीरना योगवाणा, आत्मा, छह अने वीज समयने विषे औदारीकिभित्र योगवाणा अने योथा, पांचमा तथा बीज समयने विषे कार्मिषु शरीरना योगवाणा ते डेवणी लगवान छाय हे, तेमा (योथा, पांचमा अने वीज) वलु समयने विषे नियमा अनाहुरी हाय हे, २७५-२७६

ब्रह्मार्थ—पहुँचे अने आठमे समये शरीरस्थ छेतावी औदारिक योगवान द्वय हे, अने क्षणात्तु उपचाहरणु उतां सातमा, मध्यान संहस्रां छहों तथा क्षपट उतां वीजे वज्रे समयमां कार्मिषु व्यतिभित्र औदारिक एटवे औदारिकिभित्र योग हाय हे,

मन्त्रानन्ता अंतर्मा भूत्याने समय योथा, मन्त्रानन्ता अंतर्मा लंहरवाने अन्य योगमा अने अंद्यान क्षवाने समय वीजे; ये वज्रे समयमां डेवणी कार्मिषु शरीर योगवान हाय अने ते वज्रे समयमां उव नियमा (निःश्च) अनाहुरारकाज हाय, २७५-२७६

ये शीते थारे कर्म सरपा करी समुद्धानथी निवर्तेवा ते डेवणी लगवान, उपर अह भन वयन अने शाया ये वज्रे योगने निशाव छरे हे, तेमा भन्नेयोग डेवणी लगवानने छेवा डेव घटे ? तेनुं समाधान करे हे.

स समुद्वातनिहृत्तो ऽथ मनोवाक्यायमोगवान् भगवान् ।

यतियोग्ययोगयोक्ता योगविरोधं सुनिर्वैति ॥ २७७ ॥

अर्थ—हुवे भन वयन क्षयाना योगवाणा ते डेवणी लगवान डेवणी असुइ अनश्च निवर्त्ती छतां सुनियोग्य योगथी ज्ञानेवा ते योगने निशाव छरे हे, २७७

१. इहु कर्मार्थामां योगनिवेदनो इम आ प्रभावे ऐ-प्रथम आहर वयन योग निःश्च भन्ने असुइ भन थाय त्वा आहर क्षयोगे इरीने आहरमनेयोगने अनमुरुर्द्देव इधि यजी क्षम भन्नेयोगे इरी आहर वयनथाय इधि, पछी स्फूर्त इवयोगे इरी आहर क्षयोग इधि, तपशी नेणे अनीने स्फूर्त भन्नेयोग इधि, ते पछी स्फूर्तमन्यथाय इधि, ते पछी स्फूर्त क्षयोग इधि ने सतो क्षमद्विभा अर्पतिपाती नामना र्वाने क्षुक्षबध्याने अडे.

महावर्ण अ० ५०

१४९

लक्षणार्थी—होइ अनुसार विचारनामी वशवद अन्य उपर्युक्त इन दो शुद्ध विवरणानं कठाने इतो उत्तो भर्त्या भैन घूँगे तो उव्वारी भवनाम् गतेऽप्य अही, भनोयोग्यित करण्यवडे ते अस्सो उत्तर सत्यभनेऽप्पो आरे अही, अक्षया असत्याभूषा-अवहार भनोयोगवहे तेतुं समाधान करे है, तेव रीते उव्वारी लगवानने वचनयोग पछु सत्य अथवा असत्याभूषा-अवहार इप्प छेय छे, अने गमनागमनान्दिक डिया करवाना साधनरूप औदारिकाहि काययोग पछु हुए छे, करण्य अथ शुद्ध विवरणान् ते उव्वारी भगवान् ते अवक्षधामां भोक्त्रे न लय लाम्बुद्धी वतियोग्य सत्य उ व्यवहार योगनेक प्रवर्तवि छे, २७७.

पठी ते उव्वारी भगवान् योग निरोध करे है ते आ अमाख्यः—

पश्चेन्द्रियोऽथ संज्ञी यः पर्याप्तो जगन्ययोगी स्यात् ।

निरुणद्वि मनोयेर्वं ततो ऽप्यसंख्येयगुणहीनम् ॥ २७८ ॥

द्विन्द्रियसाधारणयार्वागुच्छवासावधो जयति तद्वत् ।

पनकस्य काययोगं जगन्यपर्याप्तिकस्याप्यः ॥ २७९ ॥

सूक्ष्मकियमप्रतिपाति काययोगोपयोगतो ध्यात्वा ।

विगतकिगमनिविन्वयुक्तरं ध्यायति परेण ॥ २८० ॥

अर्थ—२८० पर्याप्त संज्ञी पश्चेन्द्रिय प्रथम समये अवन्य भनोयोगवाणो होय तेथी पछु असंभवत शुद्धुहीन भनोयोगनो निरोध करतां अते संभूर्ज भननो निरोध करी भनसहित धाय छे.

प्रथम समयता पर्याप्त विश्वदियना ने वचनयोग तथा साधारण वत्सपृति अवता के श्वासेश्वास तेथी असंभव शुद्धुहीन निरोध करतां समस्त वचनयोग अने श्वासेश्वास निरोध करे है, येवी रीते नन वचननो निरोध थया बाद अवन्य पर्याप्त पनक लुकवा काययोगयी असंभव शुद्धुहीन काययोगनो निरोध करतां अते संकेत काययोगने निरोये है.

काययोगना निरोपहादे सूक्ष्मकिया अप्रतिपाति [शुद्धुहीयनाना ग्रीन पायाद्यप] ध्यानने ध्यायीने पठी विगत डिया अनिवृत्तिद्यप शुद्धुहीयनाना योगा पाठने ध्याये है, २७८-२८०

बाबार्थ—योग सहित-सयोगीने सिध्ध-भाक्ष, ते योग छतां नहीय तेथी अवस्थ्य योग निरोध करवो अडे है, तेमां प्रथम भनोयोगने निरोध है, जेनावड भनो-इप्प वर्गया अहुष्य कराय छे ते भनोपर्याप्तिनामतुं कष्ट शरीरसंपूर्ये है, तेतुं वियोगन करवा भाटे अनंत वीर्य-शक्तित धारी भनोयोगनो निरोध करे है, उव्वा-

२८८

कर्त्तव्य देखी कर्त्ता के समाजसुनिकालके प्रथम समयों पर्याप्तता कर्त्तव्य के सर्व जगन्न भनेष्येत्-भनेष्याग्निः अहम् इदवा योग्य शक्तिर्नेत्
प्राप्तता निः। यह अपर्याप्त सुखसुधीतपये पैताना भनेष्यन्य वर्णानां व्याप्तोऽनि-
प्राप्ते तमये निराप्ते ते तसे अनेक इतीने पठी अमलकड़ केटवे तत रहित था.
इ. ए. अज्ञानिकारनो गत है। धीकाकरने भत्ते तो प्रथम समयों मन
पर्याप्तता संज्ञा चयनिक्य अव देह, तेना के सर्व जगन्न गोग छोय, तेटवे
तेने केटवी भनेष्यन्य वर्णाणां अहम् इदवा योग्य शक्तिर्नो व्यापार छाप तेटवोऽन्
भनेष्यन्य वर्णानां व्याप्तोऽने स्वचात्माभावो निराप्ते। पठी प्रथम अव्युप्तुं तेम
क्षमये तमये करी छेवटे अमलकड़-गत रहित थाय,

त्यार पठी कर्पर्दिका-कोठी विगेइ ऐहनिक्य लुक तथा सूक्ष्म निगोदादि
जं साधारण्य अव ते अनुकूले व्याप्त पर्याप्ति अने काय पर्याप्त वडे प्रथम सम-
यना प्रथापूर्व थ्या होय तेसो अनुकूले व्याप्त अने उद्यास्त् हृष्ट वे जगन्न गोग
होय तेवी ओछो अन्वय शुण छानि वडे, न्यांसुधी समक्षत व्यनयोग अने
उद्यास निःश्वास पर्याप्ति कर्षणानिराप्त थाय त्वांसुधी समये तमये स्वचात्माभा
देना निराप्त इदे पठी अहम् असूमप्यनक लुवना प्रथम समयों जगन्न फायपोगयी
असंभव्युद्दीन-क्षययोगो समये समये निराप्त इत्ये समये सर्व एष-
योग्यो निराप्त इदे ते वप्ते सूक्ष्म क्षययोगभावो हित छतां सूक्ष्म
डिय अमतिपाति थ्यानो ध्यावे छे; अने त्यादेन शैक्षिकी इदवा इदे छे,
तैल एटवे पर्वत तेनो धश के भेड़ ते शैक्षिकी तेनी क्ली निष्प्रकृपनिर्विचार
वृत्ति केजां होय ते शैक्षिकी क्लेनाय छे। ते अदसरे स्वदेह अवगाहनाथी
श्रीज दायी हीन अत्मप्रदेशो धन थाय छे। या भाषे स्वदेहभानाथी नीके
लाय योछी अवगाहना रहे अव्ययो आत्मप्रदेशो धन थाय छे? तो उ शरीरमा
निर्भानु श्वेता ने सुख श्रवण नालिकाहिनं छिद तेने घूर्ण देवाने भाषे आत्म-
प्रदेशो नो धन थाय छे। लेकी रवशरीरभानाथी त्रीज लाजे न्यून आत्मप्रदेशी
अवगाहना रहेवा पामे छे। त्यार पठी शुक्लध्यानमो चायो पाठ ध्यावे छे अटवे
के सूक्ष्म योग्यो निराप्त करी व्युपस्त सकलक्षिय अनिवृत्ति तामना शुक्ल ध्यानमें
धृत्तं ते छेवटा इर्माशने अपावी हे छे। २८८-८०

धरमभवे संस्थानं यादगदस्योर्ज्ञयप्रमाणं च ।

नम्पात्रिभागदीनावामादसंस्थानपरिगाहः ॥ २८९ ॥

अर्थ—ते लक्ष्मां लेखुं संस्थान होय अने तेनी उच्चाइनुं केटलुं प्रमाण
होय तेवी त्रीज लाजे न्यून अवगाहनावाणुं संस्थान प्रमाणु इती ते मात्रप्रदेशो
धन करे छे। २८९

२८१

लिप्तार्थी—ज्ञ के पास कालिकार्णि नहीं होपड इत्यादि वर्णाएं तो प्रत्यक्षीयी दृष्टि
वालों का अनुभव, जिसमें सभी भूतात्मेन् और उन्हें लावार्थी विद्युत् कांस्थान आने के लिए
ते शरीर के विषयों की दृष्टियां अभिषु दृष्टि ते तेता वीज लाने न्यूट ते तु जांस्थान
लाने अवश्यकता अभाव दृष्टि भावे छे—करभप्रदेशो लत विवादी ग्रीने लाज
त्यून थर्ड लक्ष छे. २८१.

सकण योगनिशाध वये छते डेवजी अवधान डेवी अवस्थावाणा थाय छे
ते कुहे छे:—

सो इय मनोवागुच्छवासकाययोगक्रियार्थविनिवृत्तः ।

अपरिमितनिर्जरात्मा संसारमहार्णवोत्तीर्णः ॥ २८२ ॥

अर्थ—मन, वयन, हृदीस अने दाययोग संबंधी डियाविशेषयी
व्याप्ति वया सता ते अपरिमित निर्जरात्मा धार्णी संसार महासागरनो पार
पामे छे. २८२

क्षान्तर्थी—ते डेवजी लगवान् भन वयन कायाना योग अने शास्त्रात्मक संबंधी
स्वर्णोडियाथी निवृता थर्ड अटेक्से सकण डियानो निशाध उरी, अनहु निर्जरात्मा
धारी थाय छे. अटेक्से तेमने संसार महासागरनी पैदीपार पहुँच्यान जमजवा. २८२.

हुवे ते युपरतडियाअनिवर्ति नःभना शुक्र ध्यानना वेथा पायाने
आतां ने ग्रैंडेशी अवस्थाने पामे छे. ते कुहे छे:—

ईपद्धत्वाक्षरपञ्चकोद्विरणमावतुल्यकालीयाम् ।

संयमवीर्यास्वबलः शैलेशमेति गतलेश्यः ॥ २८३ ॥

पूर्वरचितं च तस्यां समयव्येष्यामथ प्रकृतिशेषम् ।

समये समये क्षपयत्यस्त्रख्यगुणमुक्तरोत्तरतः ॥ २८४ ॥

चरमे समये संख्यानीतान्विनिहत्य चरमकर्माशान् ।

क्षपयति युगपत् कृत्स्ने वेदावुर्नामगोत्रगणम् ॥ २८५ ॥

अर्थ—संख्यमना पराक्षमवडे प्राप्त इत्यु छे [अपरिमित] अंत नेहे अना
हे क्षप्त अन थयेका ते अगवान् इपड झुक्स धन्यद इत्यारबु भाव डागप्रभाव-
वाण शैलेशीने पामे छे.

तेटझी समयव्येष्याने विषे पूर्वरचित रेख कर्मप्रकृतिने समये समये उत्तरेत्तर
अस्त्राव्युदी अपावे छे.

अहम समयने विषे छेद्वां कर्मीना ज्ञान्यारहित अथोने अपावीने ओहा

२८३-२८४

जाति संकुलितीम् विश्वा तत्त्वात् तत्त्वात् इति इति इति इति इति इति इति इति ॥ २८३-४

प्रथमार्थ—२८३ हृष्ण (सुरो जन्मस्तु उच्यादी शश्वत् गिरां) पांच अक्षर [५२] 'अ, इ, उ कु लु तिसोऽव्यास उत्तरां नेत्रदेवे वर्जन दासिंतेत्यता (अन्तिमास्य) मात्र काण मानवाणी शैक्षेशी अवस्थाने, सर्वं संवर्व वीर्यविद्व प्राप्ति गणवाणा इत्यामान देहया रहित धर्येत्वा ऐत्या ते उवयां लग्नान् पामे ए. पहेत्वा ज्ञानाकावाताप्ये अवस्थाभित्वा उत्तर ने वेदनीय, नाम, ज्ञात नमे आमुप्यदर्भ वाढी रहेत्वा ते मने अंतर्कुर्दूर्ध्वाण प्रमाणु संयम शैक्षिमां गोडवी शमये समये उत्तरोत्तर अवस्थान गणां अपारतो देहद्वे सम्बद्धे असंभवात् वरम् कर्म अशोने चेटदे तेर उत्तर अदृ तिने हृष्ण कर्ता ओरी जाये देहनिपि, आमुप्य, नाम नमे योग, ए चारे अध्यात्म भवेत्याप्यति, अभिगृहित्वा अथावा देहे २८३, २८४.

चेत्वे पृथी शु थाय छे ते इहे छे:—

सर्वगतियोग्यसंसारसूक्लकरणानि सर्वमावानि ।

ओंद्यारिकं तजस कार्मणानि सर्वान्मना त्यक्तवा ॥ २८५ ॥

देहयनिर्हुक्तः प्राप्यर्जु विपर्वा तिमस्पर्शास् ।

समये नैकेनाविग्रहेण गत्वोऽव्यगतिमपतितः ॥ २८६ ॥

सिद्धिक्षेत्रे विमले जन्मजगापरणरोगनिर्हुक्तः ।

लोकाग्रामतः सिद्धिः साकारेणोपयोगेन ॥ २८७ ॥

अर्थ——सर्वं गतिष्ठेत्य, संक्षात्ता भूमा द्रष्टव्यम्, सर्वत्र संभवता गोदाविक, तेजस अने कार्मण्य (शरीरो) ने सर्वथा त्याग करीने असु देहत्वा निर्भुक्त यथा सता, अपर्याप्तानि गतिवाणी समब्रेत्वाने पामीने, एक समये अनुगतिविद्व अपातिकृपहु उद्यगितिने भामी, निर्भव सिद्धिक्षेत्रे विषे, जन्म जरा भरसु अने शैक्षणी सर्वथा रहित ऐता दोक्ता अथ लागे पहुंची ज्ञानां उपयोगे सिद्ध थाय छे. २८५-२८८

आवार्थ——नरंट, तिर्यंच, मनुप्य अने देवता उप सर्वं गति थोऽय अने संसारं परिद्वयम् उत्तरायां निमित्तादृप तेभव नशकादित् गतिमां सर्वत्र थनास-डेनार ऐत्या औदारिक, तेजस्य अनेकार्मण्ये वृष्णे शरीरे सर्वथा तश्चने [अने] अपेतां विशेषयोगी भार्त्तिक्ता आ दीते छे के औदारिकादि शरीरवास सर्वं गति प्राप्त थती नही अने ते क्षवक्त नशकादित् गतिमां होय छे. इवचित् औदारिकने बद्दे वैक्तिय पथु होयके तेने घर्ववृष्टप्रतल-विषिधि-शुष्टिता प्रभनामसे तो निश्चय औदारिक, तेजस्य अने

Digitized by srujanika@gmail.com

二

માર્ગદર્શિકા કરતું શરીર બનાયે, તેથાથી સર્વચા મુક્તા જાની) કાળજી દેખિયાની ગતિને
પછી, કેવી જરૂર હૈ? તો એ જરૂર કર્ણ ક્ષય સમયથી અનેરા ભીજુ સમયને
ન છાડ્યો તેમના લઘુઅભિવ્યક્તિનેથી ધીરન પ્રહેલદે પણ ન રસ્પરો જોવી અભિવ્યક્તિ
બતિસે પાસો બોંકન સર્વચે સુકૃત પારમનાર અવિશ્વાહ એટલે સર્વચા અનનુકરિતિવડે
સુધ્યાનાર્થિત વોદાન્તેન્ટ, (અઝી સુન: અવિશ્વાહ પણ વીઠું છે તે સમયનું વિદેશિય
ભાષુદુ, ડેમડે એક સુમજનન વિશ્વાહ સંલખેન નહિ.) સમસ્તપણે કર્મિનાંને તે
સ્વિધ તેનું ફેન, રેખાં કિંદ અગવાનનો અવગાહ છે તે ઈશ્વત્સાગભાર પૂર્ખી,
તેના ઉપરના તાપાંથી, ને ઉપરનું એક ચોજન, તે નેત્રનનું પણ ઉપરનું એક પાહુ,
તે જાણના પણ ને ઉપરો છઢો લાગ એટલે ઉંડાંડી ધરુથ્ય(એટલો લાગ વાયાય
એવી અદોદર આવો) તેટલા પ્રમાણુંના ને આદાશા તે સ્વિધશૈવ કલેખાય છે.
જેમાં સમસ્ત સ્વિધ્યો (જરૂર કર્મથી મુક્ત થયેલા પરમાત્માઓ) એવ સન
અવગાહના સુજાતાને અવગાહી રહેશે. તે વિશ્વકોર વિમળ એટલે મળ પંદ્રલ વજની તાણે,
ત્યાજનન જરા મરણું અને જનરહિક શોભાની સર્વચા મુક્તાથી, પૂર્વોક્તિનું ઉંડાંડી ધરુથ્ય
પ્રમાણું વોટના હર્થ લાગ રૂપ કોદાન્તને પાસી સિદ્ધે છે. પૂર્વોચ્ચિત ગતિ-
સંકાર લાવ છતે સ્વિધ ક્ષય કલેખાય છે. ત્યાં જાન ઉપરોગમાં વર્તતા
અંતિ કિશે છે, પણ દર્શાન ઉપરોગ સ્વિધિતા નથી. ડેમડે સર્વે લાભિયો જ્ઞાન ઉપ-
રોગ વર્તતાના ઉપરે એવો આગમ વાઠ છે. ત્યાર બાધ સિદ્ધેને જ્ઞાન અને દર્શન
અને ઉપરોગ [સમયાન્તરે] હોય છે. ૨૮૬-૨૮૮.

सादिकमन्त्वमत्प्रपमव्याढाध्युखप्रत्तर्पं प्राप्तः ।

केवल समर्तज्ञानदर्थनात्मा भवति मुक्तः ॥ ३६९ ॥

अर्थ—त्यां आहि अनंत, अनुप्रय अने अव्याख्या घेवा. हितम् सुभेने पर्याप्ता सत्ता, क्षायित भव्यदृश्य, सात अने दर्शन स्वतंगी थळने मुक्त थायचे. रुद्ध

लायार्थ—के समर्थनां सिद्ध थया तेने आहि करी सहिक, करी क्षय थवाने-
नथी तेवी अनंत, डोर्झ प्रश्न उपमा घरी शेंग नहिं तेवी अनुपम अने डोर्झ
प्रश्न लतनी व्याख्याहा हूँ; अ पैदा रहित छावाची अव्याख्या एटवे राग अनंतकाळिक
दंड रहित एवा उतम सुअने प्राप्त थयेल केवण एटवे क्षयिक, अपौहगलिक-
कुशल रहित, अभूर्त अने असाधार एटले केमा बीजनी सहायनी अपेक्षान नथी
एवा संपूर्ण अने समर्थ चम्पयत्व, उपगजान अने उपवार्षत एवज केने
संसार छे, एवा परमात्मा त्वां सिद्धक्षेत्रमो मुक्त थाय छे, ३६६;

ಡेटक्सचे किंवा भते चेतनानो सर्वधा अजाव. तेऱ्या भौक्षण्ये, तेनुं निराकरण
करण्या कठोर आहे.—

२५
१०८ विष्णुवत्तमा

३८०. उत्तमानं इन्द्रियान्तर्कं तो इति तेऽपि ।

भूदिवाहर्वल्लभेः सर्वामित्रदेवाङ्ग ॥ ३९० ॥

व्याख्या—सुन्दर अधिकारी जीवा कल्पना स्वतन्त्रताप्राप्तयादी असे कृताः अर्थं प्रिय व्याख्यायी, सावान तरांग गंडांत अवाची अनेकर्त्तव्यप्राप्तित आगमना उपर्यामाभावयवी कर्त्तव्या अलाव नवी, २६०

काव्यार्थ—याडे कर्त्तव्यी सुकृता सिद्धान्तमा नेवेतन्त्रवल्लभ अथवा शानदर्शन उपर्योग लक्षण्यु न् छे, तेसो मर्त्यानि निरन्वय नाश एटेवे अलावन थहु लय, ए दुर्माध्य-कौठ रीते शानीत थहु न शडे अवूँ छे, तेभां हेतु अने दृष्टांत आ रीते, घटे छे, परिष्णामीपालु छाचार्यी अे लेतु छे अने प्रकीर्तिशिखानी ऐरे एः दृष्टांत छे, ते प्रदीप (तीपक) ना पुगेदो द्वाजा आहि आकांदे प्रगटे छे एटेवे ते परिष्णामान्तराने पामे कै-सर्वी नाश-पाशी नवा नवी, आ वात प्रत्यक्षप्राप्त्याशी सारी रीते जमलु शकाय एवी छेअने निरन्वय नाश नार्ता इन्द्रामां तो कैनेना दीक्षा विहृष्य डोड्य पशु ओळाळीहेतु अने दृष्टांतमा संबंध नवी, माटे परिष्णामीप्राप्त्याशी सिद्धाना श्रृंगार दर्शन उपर्योग दर्भावी रडे ते परंतु तेसो अ मात्र थेतो नवी.

लव-व्याख्या, लक्षणु उपर्योग तेसो लाव के द्वावक्षय ते द्वावक्षय लेतु थकी लाव कृष्णपि पशु उपर्योग लक्षणु इन्द्रामाने तवे नहि. वारी स्वतः अर्थं निषिद्ध छाचार्यी एटेवे कै आत्मानु ज्ञानदर्शन उपर्योग लवावपालु दृष्टांत अधिक्य, छे, ते भीना डैठ निमित्ताशी उपर्योग थयेव नवी, एतो अनादिकार्यी एवुँ न छे, ते कै पूर्वका उपर्योगाशी उपर्योग-च्युत थहु जै उपर्योगान्तर (यीकृं उपर्योग) पामे छे, तो पशु जानवल्लभावताने लही उपर्योगपालु तो कायमल रडे छे, ते कैठ अतु रडेतु नवी. तथा एक लाव अन्यासावप्यु झुँझै छे, पशु तेसो सर्वथा हुक्केह थहु जरो नवी. दृव्य देव इण लालनी अपेक्षामे आमांतर गयेव पुढ्यप-हिक्की ऐरे तेसो मर्त्यां अलाव थहु गयो देखाय नहि. एटेवे के सर्वीथा राग देव भैठ रहित वांतसर शर्वत्र सेमना इत्येवा अवचन-अलम अर्थं उप आज्ञा तेसो उपर्योग थकी सिद्धान्तमा-सुकृतावात्मा शान्त दर्शन दृष्टांत लवाववागा हेतु छे, एम सिद्धांतथाव छे, २६०

अे सिद्धान्तमाच्या अहिंस मतुधर्माकामां शा भाटे स्थिति न करे ? तेतु भूमाधान हुये इन्द्रामां आवे छे :—

स्वतन्त्रा शरीरदन्धनमिहै कर्माषुकक्षयं कृत्वा ।

म य विष्णुविनिवन्धनाद्वाद्वयादवयोगाच ॥ २९१ ॥

२१

२५३—क्षिदात्मा अध्यनसे अर्द्धक लक्ष्मे भाउ छर्नेव श्रव ठरी
शुभाप्रदिव शत्रावदीदेव रहन प्रदेवरदिव वेवाथी ते [क्षिदात्मा] वर ही
विविक्षिकरता नथी २५३

व्याख्या—शदीर्दीप अद्वल तेनेत्याग करीने, मनवा शत्रीरतो त्याग शीरीते
ही भोउ अडे कर्त्ता सम्भूगो श्रव इत्याथी शत्रीरतो शत्रवं निषेच थाय, अने
मिक्षमधुपशुभी ने अडे रहे नहि, तेने अही रहेवातुं कथुं शत्रव नवी.
शत्रिसहिता इत्यागे अही रहेवातुं थाय छे, ते तो सर्वथा-दम्भुग्युं गयुं तेवी.
तथा अत्यन्त हुग्यना वेवाथी सवागा विध्येतुं आश्रय स्थान दोकान शिखरल्लोय,
केम साईना अह देव वेवावीने ज्ञानगां क्षेपेव तुंभग्ना स्थगा वेप धेवार्थ नव
ल्लोय ते लग्नी सपारी उपर्यु आवे पछु नीयुं नज छी रहे, तेम सुक्त
आ-मने पछु अही डोइ शेइनाहूं प्रतिवाध कारण नवी, तेवी ते अही रही रहे नहि,
तथा अप्रेमेवाथी ओवे ते सुक्त आत्माने एवी डोइ डिया नवी ते वेवी अव-
ध्याननी कृपना करी श्राद्य एं हेतुवी पछु ते अही रिथति करै नहि २५३.

त्यारै तेभने उवेन रहुं, अन्यद नहि, एवा निमम श्वाथी ? एवा
बात शास्त्रकार रहे होः—

नाथो गौरवविगमादशक्यभावाच गच्छति विमुक्तः ।

लोकान्तादपि न परं प्लवनद्वैपशाहाभावात् ॥ २९२ ॥

षोग्योग्योग्योश्चाभावान्तिर्यग् न तस्य गतिरति ।

मिद्दस्योर्ध्वं सुक्तस्यालोकान्ताद्विर्भवति ॥ २९३ ॥

स्थर्थ—कर्म विमुक्त अथेवा ते क्षिदात्मा गौदवना अभावे अने अभ्यंगपशुने
द्वीपे अद्यगतिने लक्ष्मा नवी अने द्यानी केम सहायक धर्मस्तिकायना अभावे
द्येकान्त थही उपर पछु ज्ञान नवी अने भन वयन कायाना येग अने तेना
प्रयोगना अभावे तेमनी तिन्हीं गति पछु थही नवी; सुक्त अथेवा एवा किर्णी
होइना अंत सुधी उद्वर्गतिर थाय छे २९२-२९३.

लावार्थ—अहं पशुना अभावे नीचे न लय, कर्मसुक्त नीचे लय ए वात
णनवी अशक्य छे, पापाद्युषिं भाउ इत्य देव ते नीचे लय, कर्मसुक्त अथवा तेनामां
लारै पशु छेव नहि, ए जेवी ते नीचे लय, बलो केम वहालु अथवा भनजहि तेने
सहायकारी ज्ञाना अभावे रथगाम अर्द न शहै, तेम सहायवारी धर्मस्तिकाय
इत्यना अभावे सुक्त आत्मा पोते दोकान्त थही आगण (अवीकर्मा) ज्ञान पार्मे

२४८

कंत वर्षा लाला.

लिंगि—सर्वदेवन रिति इय दक्षण्ये देवा तेजा अलावधी तथा ब्रह्मानी ,डियाई
पर्वेय तेजा भवावदा, पूर्व पर्विभाविति तिर्थी दिशास्मिन्ना पकु ते सुका
निरामानी गतिनो संख्य तथा, ए रीति नीचे तेमज तिर्थी गतिना असंख्य
लोकाची अने, अट्टी अन्देशन करवामां कशु इरखु न छोकाची कुछा आत्मा उच्चेत्त
बाय छे, ते हृष्टे गति विकान्त सुभीक थाय छे, पर्विक्तिक्तय दृष्ट राहायना
अमावे अविकान्त गति थती नथी जै वात प्रथम पशु कहुयेत्त छे, २६२-२६३.

निधिय—डिया रहित छां पशु ते सुकत आत्मानी डैर्क गति उम थाला
पासो छे ? चैवी शङ्का उठावी शाखाकारज तेतुं समाधान करवा थाला
इहु छे :—

पूर्विमयोगसिद्धेवन्यच्छेदादसङ्गभावाच ।

नितिपरिणामाच तथा सिद्धस्योर्ध्वगतिः सिङ्गा ॥ २९४ ॥

अर्थ—पूर्विमयोगनी चिद्विधि, अंधना उद्धवी, अङ्गं लावधी अने
गति पद्धिभावी चिद्विलग्नानी उर्ध्वगति प्रसिद्ध छे.* २६४.

लावधी—शुक्रद थालनो सूक्ष्मभिद्याव्यपतिपाती नामनो जीजे खायो
निरामानां, तेमां देह निभागहीन दृष्टप्रेतेनो धन इतां डियनो, उ
संस्कार रहेत्तो छे - ते पूर्व प्रयोगवडे (इंभारे प्रथम हंडवटी लभाडेला अने
पछी स्वयमेव अंधनु करता चाडाना भ्रमजुनी पेरे) अने अंधन उद्धवी ओर८.
पीज कुलिकानीपेरे कर्म अंधन दुरी जवाची सुकत आत्मानी डैर्क गति चिद्विध
थाय छे, तेमज देणी देपरहित थयेतुं तुंगडु उम जलनी सपाटी उमर
आये छे तेम सर्व संग रहित एट्टेव असंग लावधी अने दीपशिखा अथवा
चितिनो धुमाडो उम इताविक रीतेज उच्च जय छे तेम छुक्ता आत्मा डैर्क.
गमनतर करे छे, भनक्तन उक्तभ्रमजुनी पेरे पूर्व प्रयोग जीव थवाधी, ओर८-
हुक्तना भीनानी पेरे अंधन उद्धवी, तुंगडीनीपेरे असंग लावधी अने धुमानानी पेरे
गतिपद्धिभावी—चिद्विलग्नानी उर्ध्वगति थाय छे, उम सिद्ध थाय छे, २६५.

त्वां तेमने अतुप्रभ सुख छे, उम शाथी अभावय ते अतावे छे :—

देहमनोहृत्तिभ्यां भवतः शारीरमानसे दुःखे ।

तदभावस्तदभावे सिद्धं सिद्धसुखम् ॥ २९५ ॥

*संक्षेपमां भतुप्याहि लनउप कारणोनो अत्यंत लय अधिज्ञवाची सुक्तां अदेखर
भतुप्यभव तहि, पशा लिध्विन्नन आश्रयस्यान छे, तेथी सनारव्यापारना
अलावधी तेमज शहिराविड दारखना अलावधी सुक्ता आत्मा अहीं स सारभ्यं
देखी रहेत्त नहि. (अववूर)

२० जुलाई १९८१

१५४

धार्मी——हेह असेवृतिवर्ण कहने करीर तो मन चांचली हुआ थाय है, तेवा अलाले ते हुएना पछु अलाव थाय है, तेवी सिंह लगवानने जिहिद्दु अव्यापार खड़ निकु थाय है। (कमलालु छ.) २६४.

धार्मी——शरीर अने मन तेनी वृत्ति वर्तन-क्षमतान लेटवे आत्मामां तेना संकेषणीय मानसिक हुआ ग्रुष्टिविद्वान्विषि प्रसंगे थवा पामे है, ते मन अने शरीरने अलाव थाये छ तेवी तेनाथी थवा हुएना पछु अलाव थवाथी सिंह लगवानने लगवायिक अने अव्यापार ऐसुं सिद्धिसुभ सावि अनंत लांगे आप्त, थाय है। २६५.

मूर्खशतकरद्विशिका.

शृणु मूर्खतं पित्र, तं तं भावं विवर्जय।

येन त्वं राजसे लोहे, दोषदीनो मरियथा ॥१॥

“ हे भिन ! मूर्खता से प्रादेने तुं जांतग अने ते चांबणीने पछी ते ते भाव (देव) नो तुं त्वाग ३२, तेम ३२वार्थी देव रहित भजिती नेम तुं वेष्मां शेषाने पानीश् । ”

१ सामर्थ्ये विगतोयोगः—मूर्खः

“सामर्थ्यादि छांत-शरीर तथा द्रव्य ॥ छांतीश्चित्तचे उद्योग नंकरे ते भूर्भु । ”

२ प्राङ्मः संसदि करथनः—मूर्खः

“विद्विन छांत-सभामा आत्मदाया करे ते-मूर्ख । ”

३ वेश्यावचसि विश्वासी—मूर्खः

“वेश्याना वचन छांप विश्वास राखे ते-भूर्भु । ”

४ प्रत्यर्थी दम्भडम्भरे—मूर्खः (२)

“ दंखीना आड़भर छांप व्रतीत करे ते-मूर्ख । ”

“ दंखीना आड़भर व्येष्टने तेना ने ते अछना गुणे छांप सत्यताना विष्विर राखा काहित अबुं ते भूर्भादि छ. । ”

१०३

२५६५८

५ स्वास्थ्ये वैदिक्यानेती—मूर्खः
 “नीतिशीभृत् छां वैदिकि द्वियाने श्रावनास्त्वभूर्भु”
 (साने शरीर औसत आनाद)

६ मन्त्रमान् भोजनक्षणे—मूर्खः
 “द्विजन वयते हेष्ट कर्ते ते-भूर्भु”
 ७ चपलापतिरीर्थ्याद्वुः—मूर्खः
 “चपला सीनो भति ईर्थ्याणु स्वभावनो हेष्ट ते-भूर्भु”
 (अपगतानिवारण उपाय शोषे पशु ईर्थ्या करवी नकामी छ.)

८ याचकस्तुतिसत्यवीः—मूर्खः (३)
 “याचके कर्देती स्तुति (प्रथं सा) ने सत्य भाने ते-भूर्भु”
 ९ दत्ता धनान्यनुशासी—मूर्खः

“डाइने धन आपीने पछी पश्चात्ताप करे ते-भूर्भु”
 १० दत्ता शुलकमार्गकः—मूर्खः

“शुद्ध (उधीतुं धन) आपीने पछी न भागे (उधराली न करे)
 ते-भूर्भु”

११ कठोन स्थावरकेता—मूर्खः
 “डेकुं करीने नकान विगोरे स्थावर भीड़त भरोटे ते-भूर्भु”

१२ स्थविरः कन्यकावरः—मूर्खः (४)

“वुद्ध मालुस कन्याने। वह थाय (नानी कन्याने परवे) ते-भूर्भु”

१३ मुजने राजनिन्दकः—मूर्खः

“स्त्रजने। पासे राजनी निंदा करे ते-भूर्भु”

१४ अप्रस्तुते पुरुषका—मूर्खः

“असंभ लिना ने सुंहर लाखलु करे ते-भूर्भु”

१५ अहो भूर्भानां पांच लक्षणे ऐडेंडे के सन्तोषक अनभानी नभी तेयो अहो अपूर्णता रही।
 छ. १५भी १७ अंक्षणा भूर्भु लम्पा नयी।

३५८

३०३

(उंडर योद्धुं दे पथु अन्तरेन द्विले ते.)

२० शोकोदत्तौ स्वप्नसंस्तुतः—मूर्खः (६)

“ क्षेत्रिक लालणीने (तेनापर विवाह रानी) डोठनी रप्ट भयंका
ये ते—भूर्भु ”

२१ लुच्चे बुधुजि लापार्थी—मूर्खः

“ लाली राज पासेथी लालनी धूम्भा राखे ते—भूर्भु ”

२२ लापार्थी दुष्टवास्तदि—मूर्खः

“ उत्तरासनवाणा (हुट) राज पासेथी लालनी धूम्भा राखे ते—भूर्भु ”

२३ चौर्यार्थे वध्यवित्ताशः—मूर्खः

“ चैतीना धनथी धनवान थवानी अशा अधि ते—भूर्भु ”

२४ कुष्यादिषु संशयः—मूर्खः (७)

“ दृव्यार्थी येती विगेरे कार्यभां (तेनी सिद्धिनो) संशय (झटेह) राखे
ते—भूर्भु ”
(लावधी सात क्षेत्रभां धन वावरतां इणना स डेहनायो भूर्भु).

२५ परवशः स्वगुणोक्त्या—मूर्खः

“ पोतानी शुभेत वात कहुने पछी के एसधीनताने पाखे ते—भूर्भु ? ”

२६ मुत्युमीरुः स्वकर्मणा—मूर्खः

“ पोताना कर्मे करीने भरव्यु प्राप्त थाय ते वखते तेनाथी ने जय राखे
ते—भूर्भु ”
(पोताना कर्मानु परिष्युभ्य सहनकरनाने तो तत्परत रहेहुं नोह्यमे)

२७ राजप्रसादस्त्रिर्धीः—मूर्खः

“ राजनी प्रसन्नता प्रिथर रहेहो चेली लुद्दि राखे ते—भूर्भु ”

(राजनी प्रसन्नता तो अस्थिरत भानवी)

२८ अन्यायेन विवर्धिषुः—मूर्खः (८)

१ संशयात्मा विनशयते—कार्यं पथा कार्यं करानं तेनां इणने स डेह करयोते भूर्भाध्ये. कार्यं
सिद्धिना निःसंशयपद्येन डाठपस कार्यं कर्तुं.२ अया भाऊसने पोतानी गुला चात कहेजिन नहीं क जेने कुष्यापशी ते प्रसिद्ध कर्त्ता
मेवो अप रहे अने कायम ते प्रेगत करवातु द्याखु उपर्यु करें.

२८५

कैन धर्मार्थः॥

“ विद्युती त्रिने दुष्कि (७६४) नी इत्ता सों ते-भूर्ख ”
 (अन्यायमे गविष्टुमे ते इनीज थाय)

३१. चाहुक्षियोऽन्यदार्थी—मूर्खः

“ पेताने लड़ी (भुंदू) श्री छाय छतां धरख्तीने लोलपी भने ते-भूर्ख ”

३०. मुध्यप्रेक्षी शराद्वतः—मूर्खः

“ आचुवी धायब धरेवें। माखुस खुडव नेचने इच्छे ते-भूर्ख ”
 (एम करवाथी उकटो विशेष धायब धाय-पीछुं जाणु वारे)

३१. राजान्तःपुरुषार्थी—मूर्खः

“ राजनी स्त्रीमाना शूगार रस (समाजमनी के इच्छा राखे ते-भूर्ख ”)

३२. विविक्तरसिको वणिक—मूर्खः (९)

“ निर्जन अथवा निर्धन देशमां रसाज पदार्थेना वेपारी भूर्ख ”

३३. कायस्थे स्वेहवधाराः—मूर्खः

“ कायस्थमां क्लेहनी आशा भाष्ये ते-भूर्ख ”

(कायस्थे ते क्लेह स्वार्थीज गण्डाता हना)

३४. स्वल्पार्थः स्फीतदम्बरः—मूर्खः

“ विद्वा धनवाणो छतां मेटो (धनोद्धनी क्लेहो) आडंभर राखे ते-भूर्ख ”

३५. भूरिभाग्योचतः कीर्त्ये—मूर्खः

“ धल्लां जारा लाभ्यवाणो छतां के भाग किसिने भाटे लघम करे ते-भूर्ख ”

(भाटा-प्रैड नर्थीभद्रारे तो चुपान-तथा अभयहानाहि करवामान जाचे यथा गण्डुवो क्लेहुवो)

३६. श्लायायं स्वल्पमोजनः—मूर्खः (१०)

“ पेतानी अवपाहारी तरीकेनी प्रथंशा करावना माटे के अवप सेन्जन करे ते-भूर्ख ”

(घविष्टुमे लुभ्ये रहे)

गुरुवृंश्चित्तक.

२५३

३७ पांडिनोऽस्मिन्नति वाचालः—मूर्खः;

“ हुं पदित हुं अहुं ने स्वभुवे वेदे ते—भूर्भु ”

३८ श्रूरोऽस्मीति च निर्दिष्टः—मूर्खः;

“ निर्दिष्ट थधुने जे शून्यीक हुं अम थतवेते भूर्भु ”

(शुरवीर पथ्यं गताववाती भातर निर्दिष्टपथ्यं वापरे ते) एम शीकारी.

३९ यतिः परिग्रहाकांक्षी—मूर्खः;

“ यति (त्यागी) थधुने परिग्रह (धनादिक) नी ईच्छा राखे ते—भूर्भु ”

४० वाचा मित्रविरागकृत—मूर्खः । ११ ।

“ वाणीये करीने भित्रने विराग (गोट) उत्पन्न करे ते—भूर्भु ”

(भित्रनी साथे कडौर वाणीये न घोलवु लेइये..)

४१ आत्मसंभावनास्त्वचः—मूर्खः;

“ पोतानी योऽप्यता—श्रीर्ति देखाइवाने जे स्तम्भ (अङ्ग—अलिमानी) अने ते—भूर्भु ”



संयमवंतं साधुजनोतुं वर्तन जगतने केवुं अनुकरणीय होय ?

तच्चिन्त्यं तद् भाष्यं तत्कार्यं भवति सर्वथा यतिना ।

नात्मपरोभये वाधकमिद यत परतश्च सर्वाद्युम् ॥ (प्रथमरति)

जावार्थ—संयम भाग्यमां यतनावंतं यतिभङ्गाशय भनथी ऐसु ज चिन्तये—
विचारे, सुख्यी अेवु ज उच्यारे—भाष्यु करे अने कायाथी अेवु ज आथरखु करवा प्रभाव
रहित प्रपत्नशील अनी २५ के जेथी पोताने के परने के उपरने आदेडमां के
परदोडमां क्यारे पथ्य आधा—यीडा उपने नहि, पथ्य जहुने कर्व स्थगे सर्वदा
सुख्य भणे.

परमार्थ—संयमधारी, संसार त्यागी, निःस्वार्थ वृत्तिगाणा यतिन्नने धा
मुनिजनोतुं सदर्तन हुनिधाना प्रायः सर्व शुद्धेने अने योभ्यगावाणा भव्य लुदेने

૧૯૮

નોંધ ખર્ચ ગ્રહણ.

જીએં 'હતકારી' કદ શરૂ છે, જેથી ને અહુંને પોતાપોતાના વિશ્વિત જીએંએ પ્રમાણે આત્મના જોગ્ય બને છે, અને તેને કેટલા એથે આહુર કરી યકાય છે તેટલા એથે હનીયાંતુ હિતજ થનું જાપ છે. આચી સંયમલુલન બેડાન્ન હિતકારી છે એમ કૃપા થાય છે. અરેખર સધળી જ્ઞાસારિક આશા-તૃપ્તણાને ઉદ્દી સંયમલુલન લુંબનાર રુનિ દાશકની અંતરનાલના ધાર્યીજ ઉમદા હોય છે. કુશ દ્રષ્ટિના સંસારી હંદેને જેવો ભરા તારનો હોટ ભાસ હોય છે, તેવો તેમનામં હેતો નથી. તેમને તેસ બું જગત નિજ કુદુંબ કેલુંબ જણાયું છે. આચી ઉત્તાર લાલનાલને ગમે તે મનુષ્યોનું ચારિયણ અતિ ઉમદા અને અન્ય લભ્ય નોને અતુક્ષેપ ચોગ્ય અની શકે છે. કેમતુ મન સદા વૈરાગ્યથી વાસિત-વિષય ક્ષાયના પ્રયંકથી વિશ્વકાલ-સમતા રસમાં રઘાયેદું રહે છે. તે સુનિમહાશયો અને તેમના પવિત્ર પગદે ચાલનારા સુધીઓ આખી આલસની સદા શાનિ છુંચે છે. સહુ સદગુણ્યથાળી એક બીજાનું લદુંજ ચાહુતા અને કસ્તાં રહે, તોએ પણ હુંગી કે હોષા-વાન્ન રહે અને સહુ સદાય સર્વાય સુખી સુખી રહે, એવીજ અમૃતમય આશિયોની વૃદ્ધિએ તેજો કરતા રહે છે. બળી તેચો એવા ઉત્તમ વિચાર માત્ર કરીને વિરસ નાના, પણ કેચો અસ્તરન અને અવિદેશીયો હુંકારો કરી હુંગી થઈ રહ્યા હોય તેના ઉત્તર કરી લાલી સહૃપદેશવઢે તેમને તેવા પાય-કંથી ઉદ્ધા વા અને પવિત્ર સુષ્યમાર્ગ ચઢાના અને તે ના હુંશિથિત ગમે તે રીતે દૂર કરતા તનતોડ મહેનર કરે છે, અને તેવા કાર્યમંદ થય શક્તિ તન મન ધનથી મહંત કરવા અન્ય યોગ્ય જનેને પણ પ્રેરણ છે-પ્રેરણા કરે છે

ખૂદેં સુહૃત્યો કરવાવડે સુખી થયેલા અને પવિત્ર આચાર વિચારના સતત ચૈવનથી સદગુણી બનેલા અન્ય બાધુઓને અને હણેનોને નિરખી નિરખી દીવિમાં પ્રસુતિત થાય છે, સુહૃત્યની અનુમોદના કરે છે, એ બધું સુહૃત્યતુંજ ઇણ છે, એમ બદ્દી ચેરે જમણાંની તેમને પવિત્ર ધર્મમાં અધિકાધિક ઉત્સાહિત કરે છે અને પુષ્યમાર્ગમાંનારી રીતે દ્રદ કરે છે; જેથી તે પણ એ સુનિમહાશયની પેડે સર્વ શક્તિથી શાસનની પ્રલાયના કરે છે. બળી પૂર્વ લરના પ્રચંડ પાપથોળે અતિ ભડીન અધ્યાત્માયણણા, નિર્દ્ય પરિણામી, જિન્દગ અને ધિક્કાઇને ધાર્ય કરતારા આત્મદોહિ હંચો ઉપર પણ દેશ માત્ર દેય નહિ લાવતાં તેમને પ્રચંડ કર્મવિશ સમય, એતાના મનતું સમાધન કરી, સંયમમાર્ગમાં સાવધાનપણે આત્મવીર્ય દરદ્વી, સ્વપ્તનું હિત સાથવા ચૂકતા નથી. એ રીતે વિચારમાં, વાચામાં અને આચારમાં સુષ્ય-અમૃતતું સિંચનકરતા, અનેક ડાટિ ઉપગારો વડે ત્રિમુખનાલાસી લુંબેને પ્રકૃત કરતા અને અન્યના દેશમાત્ર શુણને પણ સ્ફુર્મદર્શક થંગ નેવી અતિ

संयमनंत रात्रूनोपु नाम व्यक्ते तेवुं अनुकरणीय होते ?

१११

आर्थि रघिशी पर्वा ऐवा चिथाण दृपे जेह तीक्ष्मां आतंडिं था, तेवा सत्-नु
साधु अनो आ-जगतीतगुडिपर नियरी, गोताना पर्वत मन-विचार, त्वयत-
उपदेश अने आरिन-आचारवडे उत्तम ज्ञाने अनुकरणु ठेक्का शेष्य अनी
तेमने पावन करे छे.

आया पवित्रात्मा थंत .सुभाषुजनोवडे घृथी रत्नगर्भी क्षेष्य छे.
तेमना उत्तम शुश्यानुसावरडे चिथाप्राप्त अने विक्षाटिं प्रमाणीति विशेषी,
सहा सर्व लुभदायी एवुं सुदर अंयमधग्ग आपण्यामां स्फुरो। धीति शम्.

लेखक-समित्र कृष्णरिज्यल

अविवेकथा आनपाननी वस्तु पां थो ब्रह्मवाडे अने तेथी थता
आनिष्ट परिणाम अटकाववा भाई विवेकनी जडूर.

गहे गे लागे काढीयावाड शुक्रातता धशा एक स्थगोमां आनपान संगांधी
आचार चिथारमां डेट्टीचेक एवी गंभीर आभीओ लेवामां आवे छे ते नेथी
धशा अनिष्ट परिणाम आववा पामे छे. अगुथि अने डेहेवी वस्तुमां नजरे
(नरी अंगे) नडि देखी शक्य येवा असंज्य भंभूतिम लुचो लाशे लाशे उपरे उ
अने लय पामे (मदे) ने, एम नाननाशा लाइओ अने झेनो पणु आनपान संज्य
थोता एडवाडे अटकाववा ज्ञे: पूर्णी इण्ड राखी प्रथत ठेर तो तेमां ज्ञ दी
सुधारो थड शडे एवो लांबव छे, पछु तेवुं हूँदरकार गहु शेषाने छाय छे.
आज आजेवानोनी तेमज हरेक मनुष्यव्यक्तिनी येण्मी इरज छे ते चातुरुं
तेमज परतुं अहित थाय नेवुं न करुं-करानं जडूर अटकवुं, अने अन्न रे पञ्च
अहितथी अथवा अद्व चैनावतुं हातवा तरी धरेवर खाली खीवा नाई
लरी राखामां आ-ते गोजो ए अथवा देवना नाडा (अरेहा)नी ७ (मा-
वाणी स्थिति क्षेत्रवे छे, डेमजे एम अवेदामां गमे ते टोर मोहुं धाती तेमांतुं
पाणी चीतां पेताना मीती लाण पाणीमां नांधी तेने अथविव अने असंज्य
लुचोने उत्पन्न थवानुं अने तेमांत पाणी लय पामवानुं स्थान अनावे छे, तेम
डेक्षी एक धर हाट ते वापारामां नान-डे संघर्षमध्यामां सगरडनी आतर पेतानां
कुङ्कुंने भाटे, भित्र ते नंकरन भाटे ते जाति ते श्री संघर्ष भाटे पाणी लरी राख-
वामां एक अथवा अनेक वाळखें राखनानो रीवाज चालु छे, तेमांधी एक शील
नाना नानासुरती पाणी भरी ने मोहुं मांडी नीता लय छे अने ते वासवने एहुं
मूळी आवता थाय छे, तेमां लांगवी भेणां लाण अने अचेलुं एहुं पाणी वाहवार

२१३

लेन धर्म मठम्।

प्राचीना देवता वासव्युधां पटे हे, अने ते आगा पाण्डीने जप्त देवाखुबागुं लक्ष्मीकुण
सन्ताने हे. तेमां प्रथ देवाखुण पाण्डी पीचारी घण्टाएळे पीनारना शरीरमां विकिध
दाविधिना भूया देवापाथ हे, अने ते शेग धीमे भीमे विकराण ३५ धारी तेनो विष
भीनासे दुग्धाठेहु. अने को दीते घण्टाएळने ताच, खांसी अने क्षय देवा देवा देवा
लागु पडी नय हे, के पधी द्वर करवा कडीन थध पडे हे. ए उपराना असंज्यात
रांभूलिंभ लुवेनो धान थया कडे हे, अने तेमाने के विषमय कविवरो शरीरमां
जप्त लयांकर देवा उपनये हे तेने उपशमावना अनेक पाचारंज करवा. पटे हे,
अने को आग्रह व्यापाध राखतारा धीन देवानी नजरमां हूकडा पडुं पडे हे. ते
इत्यां जे प्रथमधीन व्यापाध राखतामां आवे, पाण्डी देवानुं अने गीवानुं वासव्यु
जुहु झुहुं राखी पाण्डी गीधा पडी तेने लांडी साइ कडी देवामां आवे. तो ए अनि-
ष्ट पदिधानी अनवा पामे नहि वगी भ्रष्ट-अपवित्र (एळां करेवां) लुकुण
जण रसोई करवामां तेमज उकागवाना उपचोगमां देवामां आवे अने तेवा भ्रष्ट-
वेहा जगवडे अनेकी रसोई विशेष मुनिश्वेनोना पात्रमां आपवामां आवे ए उवें
अने केटवी अघो अविवेक हे, ते भुज भाईण्डेनोच्चे अरागर नव्यारीने तेने जल्ली
द्वर करवा निक्षय करवो अने तेने पाण्डुं रिसरी नहि झुं. जण ए धांडूं ओडूं
डिंडी छांडां अहुज जडरतुं अने धग्गा मोटा प्रभाण्युमां वपनतुं लुकन हे, तेमां
मुं. १० नोवें राखतामी वाष्प आदे नुकशान थय ते तेनामी पथर माटे हरेके हरेके
०० डेवानी चीट लरेवी द्वरज रडेवी हे. तेमां केटवी गद्दवा तेटखुं तुक्षशान वेढ-
तुं पटे हे पाण्डीनी पडे पाचाना पदवर्णीमां पथु पथु स्वगो धगो अविवेक चाजतो
जग्गाय हे, अनं तेना प्राचावुमां नुक्षशान पथु पाचवार थया पामे हे. चेताना धरमां
तेमज नान के जंधनस्थेमां घण्टीज एह छांडवामां आवे हे, तेमां के नाहुक
द्रव्यंता नाश थाय हे, तेने अरवाणो करवामां आवे तो ते धग्गा मोटा थवा
पामे, अंतु तेमां देवाखु कड थरां के पाचावार लुकडिसा थवा पामे हे, तेने
दिव्यार करवा तेने एह अनं कंपारीज उपनये हे. एहुं काम करखुं तेवाधर्मीनी वात
द्वनारन लगावे छाजतुं नथा, एहुं नहि पथु खरा धग्गुनी नजरमां तो ते
शरमावनां अने २.६३८३ी करावनाहृन हे. तथी भुज भाईण्डेनोच्चे कर्याय पथु
एहुं नहि छांडवा आस प्रतिज्ञा करवी जेव्हाचे. धति शम्.

सन्निधन कर्मविजयल.



ધેણે મહિને કરતું જાત્કા રસારા.

૧૧૫

ધેણને પ્રમાર્ગે કરવા જોડદા ગિયારો

દ્વારામાં ભાવનગર, અમદાવાદ, સુરત વિશેરે સ્વર્ગાચે પ્રેરણનો હૃદ વ્યાપિ શાબે છે. લોકો તેના સથથીનું આગનાશ કરે છે, એકસ્થળથી ઓચે સ્વર્ગ-જીવનાંડે, વળી તે સ્થળની હવા અગ્રવાને સલ્લા જાણાનાં કીનું સ્થળ યોધ્યું પડે છે. વહાલામાં વહાલું ધર અત્યારે અકાઢ-અગ્રાંભજીવિષ્ટ પણ્ણું છે વ્યાપાર ધંધાને વિસારી મૂર્ખાં પડ્યો છે, વિષયવુત્તિને વિસારી આપવો પડ્યો છે, આનન્દાનો એક ખૂબી જ્યો પડ્યો છે, અધુરામાં પ્રાણી વરસાદે શયનના સુખને પણ જોચી કીધું છે, રાત્રીએ વરસાદ પડાં ડાયાં મફાનો તેની વાનદી ચખાડે છે, એવું નિદ્રાદેવી રીસાઈને ચાલી જાય છે. આવા અનેક પ્રકારના કષણા સમયમાં પણ ચોતાની મૂળ આસીઅત આ પ્રાણી ભૂતી શક્તો નથી. અથવાદ્વિર્યની કેમ ઉપરથી કેટલીક વાસ્તવાણો રોકાણી પડે છે-રોકાય છે, પરંતુ અદરથી વિષય કષણની વાજુના ગિયાતું પણ દેખવણો દેતી નથી.

ગરીબ માધ્યમેને તો આ હૃદ અસંદ્ર થઈ પડ્યું છે. રહેવાતું હૃદ્દકુદું સ્થાન, તેમાં વરસાદની મહેરણાની, સુંડાં વસ્ત્રોને પણ અભાવ, આજા પ્રમૃગે તેમાં હૃદાનો વિચાર કરતા પણ હૃદય કંકણી છે છે. તહુપરાંને ઉદ્ઘમ કર તોણ પૈસા મેળવે ચેની રોજુચાને ઉદ્ઘમ નાશ પાની જગથી અને નોકરીયાતને નોકરી મળશે કે નહીં ? શેડ ચાલુ પગાર તેની નોકરી કર્યા નિના આચા કરશે કે નહીં ? નેવી શાંકા થતાં મનમાં અનેક પ્રકારના આદકુદ્દેઝ ઉત્પલ ધાર્ય છે. તેમાં પણ નવાં ભરજાનાં લારાં, આવવા જગતાં અર્થ અને ચાલુ મેંઘવાદી કે કેમાં અનાજ, ધી, તેવ, હૃદ વિશેરે આર્થ લોકના પણ્ણેની કિંમત ઇન્દ્ર આપવી પડે છે, તે સર્વને શી રીતે પહોંચી વળબું તેની સુષુદેવી તે સ્વિતિવણાજ અતુલને છે, અને સુસ તેમજ અનુક પાણુકત ઈષ્ટિવણાજેજ તેનો ખ્યાલ આવે છે, જીજને આવનેનુંનથી.

આવે પ્રસંગે જેને શુલ મુદ્દોદયના સરોગદી જારી દ્વારા પ્રાપ્તિ થયેદી હોય તેણે પોતાતી પદ્ધાપકારી દુઃખ વિસ્તારવાની જરૂર છે. તેમણે તો નિરતર એવાજ વિચાર કરતા નેધ્યે કે, હું મારા જ્ઞાતિશંખ પ્રત્યે, ધર્મણંધુ પ્રત્યે, એક વતન-વાળા પ્રત્યે તેમજ મનુષ્યનાત્તિ પ્રત્યેની મારી દ્રષ્ટ શી રીતે અનુભું ? મારા દ્વયને સહૃપત્યોગ. કરતાને માટે આગે નહીં દુઃખના લાયક, પરંતુ મહાનંદી આપનારો પ્રમૃગ પ્રાપ્ત થયો છે, તો હુદેક રીતે મારા દ્વયને સહૃપત્યોગ કરીને તેને સંક્રાંતિના સ્થાન ન મળતાં હોય તેને સ્થાન મેળવી આપું, સારાં સ્થાન મળે તેવો

५२८

तेव तद याता.

प्रदीपसा उर्मि आपु, रोमे अनभानी गुरुदेवी डेवे ने तो नवीनी सहाय आपु, प्रियार्थी भवद्विद्युतेन ते महद इदं, हुःभवदस्यो चीडाता हृष्य तेन चौपाठनी के बैठक-लालारीसहाय इदं, अश्वार इरनार न हृष्य तेन शाश्वार गवे इदं, अथवा शाश्वार करनार चेणी आपु, हैव्यगेगे मरण्य शरण्य थवा मनुष्यने तेवे प्रसंगे पथ्य चैव्य सहाय आपु, गारायी अने तेटवी महद उत्तर दिवयो हुं आपु, अथवा अन्य प्रज्ञेरी अपापु, परंतु भावं चावे त्यां सुधा डेहिने हुःभी थवा न इदं, हुःभी जनों भी अपर देवा भानी भाष्यसो गेहुं, तेवा भाष्यसो भारद्वा अपर भग्नां अहु ऋषी नवरे न लेतां-भैरवी नवर्धीसहाय आपु, एम अनेतेम येव्य वथते महद पहेंची लय तेम इदं, शरण्य ते वथत पीत्या पठीनी महद डेहिनी डिभतनी छे, अने येव्य अवसरे पहेंची भद्र अभूद्य छे.

द्रव्यवानों तो आवा विचारो अहुर्निश आवा हुःभद्रायक सभयमां करवा जेहुये, अने तेनो जेम जेम अमल थतो लय तेम दिवमां साल थवुं जेहुये, जेम वधारे द्रव्यनो व्यय थाय तेम अनर्थभूता द्रव्यनो सहुपयोग थवाने अगे लंतुष्ट थवुं जेहुये, डेट्लाक द्रव्य भरवीने पथ्य पाहो पस्तावो इरे छे तेम थवुं ब जेहुये.

सामान्य स्थितिवाण्ये पोताथी अने तेवी शीते अन्यने सहायक थवानो विचार करवो जेहुये, आर्थिक महद पोताथी न गनी श तो शारीरिक महदआपनी जेहुये अवे प्रसंगे हैवेकापथी कडी डेइ मनुष्यने खेगनो व्याधि थोरा डेय तो रोने जेहुने हुह्यमां अनुकूपा लाववी जेहुये, परंतु तेनी जामे शानी जेम धुर-धुरायमान नेत्री जेवुं न जेहुये, जे भास्यने ए हुह्य व्याधि लायु पत्तो डेय ते द्याने पात्र छे, तीस्तानरने पात्र नदी. तेने आनुभां अर्ददो जेहु तेना साडायक थवाने गद्दे तेने ढाढी भूत्यानो, हुःभी करवानो. गाडी गाडी करावानो प्रथल करवो ए डेट्लु निर्विपर्युँ छे, तेनो अ्याल पोते अथवा पोताना अलगाना सं-धांधी तेवी स्थितिभां आवी पडे त्यादेव अदेखदो आवे छे, ते शिवय आनतो नदी. आनुभां तेना व्याधिवाणाना आनवाथी पोताने ने न्याधि चारी जटो नदी, चेवो डाकतदो अनियाप स्पष्ट छे, अने जे आववाने डेय छे, तो रोने अरुकांती शाकातो नदी. अवे प्रसंगे पोताना लति गांधु ऐ प्रते के नलुकुना जांभ-धीच्यो प्रत्ये पथु कुट्टूर्थियो जेवामां अवे छे, ते डेइ पथु तीते घटि १ नदी. १३ नार हुःभी मनुष्योंने दीक्षानो आपवो, अस्मान देहुं, सहय इद्वी अने तेना हुःभे हुःभी थवुं, एव द्याणु मनुष्यनुँ आस कर्व्य ते.

डाकतदी के वैहिक्य धांधमां पडेला भ्रुउपोच्य पथ्य आवे प्रसंगे द्याणु ६ छे ऐ खेगना व्याधिवाणा तरह जेवुं. शक्तिहीन भाष्यस पासेथी कडी पोतानी शी मनी

જેણાને મર્ગની કરવા નોંધના નિયમાં,

૪૩૫

તું ન મળી તો પણ સતેષ ભાવવો અને ઐકા મળે રેનીજ દસ કરવાને વિરતા
ન રાખતાં હુંથી તરફ દ્વારું નજરથી નોંધ વળું શીંગે પણ કામ કરતાં શીખનું,
શ્રીમાનતું દ્વારા જેટો લાંબ આપણો તે કરતાં ગરીયાનો આખીવર્દિ વધારે લાંબ
આપણો, એ ચોઝક ધ્યાનમાં રાખલું.

વાણીવિલાસમાં, વિચયશ્છુ મનુષ્યોએ આવે પ્રસંગે દ્વારાનોને તેની દૃષ્ટિ
સૂચવવામાં અને હુંથી પ્રોને દીલાસો આપવામાં પોતાની વાણીનો ઉપયોગ કરવો
નોંધાયો. આવે પ્રસંગે તત્થી, મનથી, ધનથી, વાણીથી, અથવા બીજુ કોઈ પણ
સીતથી મરદ આપવા આપવાવામાં તત્પર થવું નોંધાયો, તે શિરાયનું મનુષ્યપણુંન
નિષ્ઠળ છે.

આ પ્રસંગે હુંદુંની અંદર નિરંતર અનિત્ય અને અશરથ ભાવવા ભાવની
નોંધાયો, અને મૈનો તથા કર્ણથી ભાવવાને અમલમાં મૂલ્યી નોંધાયો. સંજ્ઞાનું કે
લષ્ણાનું ખરું સાર્થક તેજ છે, હાલ આટલી સૂચના કરીનેજ વિરમાનમાં આવે
છે. તે નાથે પ્રેરણા ન્યાધિની મરણશરણથતા શુદ્ધિવાળા મનુષ્યોને પરમાત્માના
નામનું સ્મરથ આપી, મરણુંનો લાયન રાખતાં આનંદથી મરણને શરથ ધાય તેવી
દિશિતમાં, તેવી વૃત્તિમાં, તેવા વિચારમાં મૂક્ષનાને માટે પોતાની શક્તિનો, પોતાની
સમજાણું, પોતાની સમજાવવાની ચાલાકીનો ઉપયોગ કરવાનું પણ ભાસ આવણ્ય-
કાલાયાનું ડેવાથી સૂચવવામાં આવે છે. કેચો કોઈ પણ પ્રારસની પોતાને પ્રાપ્ત થયેની
શક્તિનો આવે પ્રસંગે અથવા નિરંતર અહુપયોગ કરે છે તેચો તેવી શક્તિને વૃદ્ધિ-
ગત કરે છે, અને જન્માંતરમાં વધારે વધારે મેળની શક્તિ છે; કેચો પ્રાપ્ત-
શક્તિનો હુંદુંનો કરે છે અથવા ઉપયોગ કરતા નથી, તેચો તેવી શક્તિની હાની
પ્રાપ્ત કરે છે, અને તેથી અતરાય કર્મ બાંધી ભવાંતરે તેવી શક્તિરહીત જન્મ
કે છે. માટે આ શિક્ષા ધ્યાનમાં રાખવાની ભાસ ભાવામણું કરવામાં આવે છે.

ઇતિહાસ.

- २२८ -

४२३

દેસ ભર્તી માટે

૬. હરંદુજરોપાણ્યાચ કૃત

સુનિલ ચચિત્ર ભાષાતંત્ર

દેસ ભર્તી માટે ૧૯૫૫ થ.

— : ૦ : —

સુનિલ હર પ્રકારમાં જાતિ રહેયો, તાં તત્કાળ ચુદ્ર થપેન ડોચાથી ઇધિસ-
પુરિત મનુષ્યોના ભરતા, એડ એ હાથ પગ વિગેરે પડેલાં લેયાં અને શુગાલ તથા
ગીધ વિગેરથી બ્યાદું રસુંનું રોગ જોવામાં આવી. લાં ઘેત વચ્ચ કેણું ધારણું
કરેલાં છે, અનોઈથી કંનું શરીર કે કંન છે, કેણે જીન કરેલું છે. દર્જની સુદી કેણે
અંગુલિમાં ધારણું કરેલી તે જાતે એ શરીરનાં ખડ્ઝાને કે આમ તેમ હેઠળી રહ્યો છે
એવો ડોઇં આદ્ધારું તેના જેણું જ.બો. તેને જેણુંને સુભિત્રે કંદું કે “હે નિમ !
આ અપવિત્ર સ્વયામાં બધન હૈ ને યોગ્ય એવું કુસિન કર્મ તુ શા મારે કરે છે ?”
તે આદ્ધારું યોગ્યો કે “હે કુસિ ! અદ્ધારા વિના તમે આ શું એવો છો ? કારણુંકે
જીવદ્યા ઇંગ ધર્મની જગતની કંઈ કહેવાય છે.” સુભિત્રે કંદું કે “એ વાત સત્ય
છે, પરંતુ હે નિમ ! તુ છરદ્દ એ રીતે કરે છે ? તે કહે.” તે યોગ્યો કે “હે ધર્મ-
કર્મમાં આશ્રમી ! જાંનનું હુદ્દું જ્ઞાનથી પ્રાપ્ત થપેન સંલુચની વિધાથી આ મનુ-
ષ્યોના અવયવો ચેળજને હું કેરને સલુચન કરીશ.” આ પ્રમાણેના તેનાં બચ્યન
સાંભળીને કેટાંકથી જોગમાટે ન હુદ્દું રહ્યા. તેવામાં મૂર્ખિત થપેના તે સુભાગોના
તથા હાથી ધોડા વિનિને શરીરને કથપ્યોગ હાથ પગ વિગેરે જોડીને તેમજ ધર્મ-
પર અર્થાંશ. મસ્તકો અંગ એ જોડીને રહ્યાન્યાસ એવા પોતાના હસ્તથી તે
આદ્ધારું અનેક હાથી, ધોડા, એ રહ્યાને કથબુન્ધારમાં સલુચન કર્યું આ પ્રમાણે
સાક્ષાત્ જોઇને તેઓ પરદસ્ત હૈ એ પણ પામતા કહેના લાગ્યા કે “અહે ! આ આદ્ધા-
ખુની વિધા અમૃતસમાન રહ્યું હૈ એ પુરોહિતસુરતના આશ્રમથી સુભિત્રે તેને
મધુર બચ્યનથી કંદું કે “હે કંદું ! જા ! વિધા તમે આપો શકો છો ?” તે યોગ્યો
કે “હે કુમારેંદ્ર ! કંનાન્દી કે જ વિધા ડોઇને પણ આપવાની તો છે એ, પરંતુ
પરીક્ષા કર્યા વિના ડોઇ કુસિને આપવાની નથી.” એટાં પુરોહિતપુત્ર સુત્રામ
સુભિત્રેની અનુરૂપ લાઈન વિધા કે કંઈ કથાથી તે આદ્ધારુની પાસે રહ્યો. પછી તેનો
વિચોગ સંહન કરવાને અસ્તુત્યે જાત ગદશહ ગિરાથી મંત્રતી જેમ મિત્રતા કંઈમાં
‘પુનઃ શીશ આવીને તારે મન નાનુ’ એ પ્રમાણે કંઈને વિચાળ નેત્રવાળો સુભિત્રે
સૂર અને સાગર સુદ્ધિન ત્યારે નાણ ચાર્દો.

પૃથ્વીતણપર વિચિત્ર કુસિ અચ્છોડીતો કુમાર ડોઇ ચાનિવેદની પાંચેના

સ્થાનમાં આવ્યો. ત્યાં એક ગૃહ શોયા કાષદે વડાચાવેલા રીતે પડેલ હેઠળ સુના. હેઠળ તેણે લેખો એટલે ‘હે સુવધાર શિરોમણી ! આ કાષદું તમારે શુ કર્યું છે?’ એમ સુભિત્રે પૂછ્યું તેના જરાયમાં સુધી અણ્યાંયું ડેં એને અનાવર્યો છે’ સુભિત્રે હુનઃ પ્રદેશી કે-‘કાષને રથ અદાશામણે’ એમ ચારી શાખે? એટલે તે બોલ્યો કે ‘હે કુમાર ! મારી વિદ્યાને પ્રેરિત થવાથી તે ચારી શાખે.’ પછી જાગરના અભિજ્ઞાની સુભિત્રે તેને પૂછ્યું કે ‘હે લદ ! એ વિદ્યા ન મે ડેં પાત્રને આવી શકો તેમ છો?’ તે એટલ્યો કે-‘યોગને ચન્દુની રેમ વિદ્યા શા નાટે ન આપવી ? પરંતુ ડેંલાક વખત સુધી પરીક્ષા કરતાં એ તેમાં ખાર ડતરે તેને યોગ્ય સમજાડો.’ આ પ્રમાણે સાંભળીને ‘આપને મ ટે એની રહેણી નિધા કઢિને કું તરતજ આપને મળીશ.’ એ રીતે કહી સુભિત્રની અનુજ્ઞા લઈને જાગર તેની પાસે રહ્યો, એટલે પ્રીતિપાત્ર એવા તે મિત્રને પણ ત્યાં મૂકીને રવિને પણ છુતે એવા સૂરથી સેવાતો સુભિત્ર આગળ ચાલ્યો.

સુભિત્ર કુમાર અનુકે પુષ્પપુર નામના નગર પાસે આવી પહોંચ્યો. તેની સમીપમાં એક સુંદર હાનશાળા તેના લેવામાં આવી. ત્યાં અથ પ્રદેશમાં રડેલા અને મોદકાહિકથો ભરેલા સુવાર્ષ રૂપ્યમય ભાજનોમાંથી અતિશય સ્તિર્ગ્ય તથા બૃહસપુંકત વિવિધ આડાર લઈ લઈને નિરંતર હજારે મનુષ્યને ભક્તિની પ્રેરણ કરેલા થીને કોણન કરાવતો હોય્યમાન કમગાદ્ય સમાન લોયનવાળો કૃપામણ્યપૂર્ણ અને વિશ્વવસ્તુ એવો એક પુરુષ તેના લેવામાં આવ્યો. એટલે થાડા વખત ત્યાં રહી તેતું પણ સ્વરૂપ અરાવાર જોઈને સુભિત્રે તેને વિસ્મય સહિત પૂછ્યું કે—“હે સત્તુ-રૂપ ! આપનું નામ શુ છે ? અને ચારે પ્રકારના આડારને આ ભાજનોમાંથી નમે વારંવાર શી રીતે મેળવી શકો છો ? સત્કાર્યી નિર્મણ જળની વેમ ચારે પ્રકારનો આડાર વારંવાર કહાડી લેવા છતાં હીરીને અશ્વય સુગર્ધવાળા જરસ અદ્ભુતથી તમે સર્વ લોકના મનોરથ કેમ પૂર્ણ કરી શકો છો ?” આ પ્રમાણેનું પ્રક્ષ સાંભળીને હંત-કાતિને પસારતો તે પુરુષ એટલ્યો કે—“હે લદ ! ચયત્કાર બુકત એતું મારું સ્વરૂપ તમે જાંલણો:—

આજ નગરમાં બ્યાબુદીઅચ્યોમાં શૈષ્ય એવો ધન નામે શેડ વસતો હતો. તેના હું બદદચ નામે પુત્ર છું. કુર્કમ્બના ઉદયથી આદ્યવયમાંચ મારાયર મારું પિતાના નિગેરણ હું ખ્યાલ આવી પદ્ધું, એટલું નહિ પણ અમાર્યને દીધે લક્ષ નાચે. પણ અનુકે મને તળું હાથે. પછી અનુકે હું યૈબનારૂઠ થયો, એટલે કન્યાની પણ ધનાશા મને વરો. તેથો ધનના કારણે હું અહીંથી અન્યત્ર જવા ચાલ્યો. અહીંથી પૂર્વ દિશામાં થાડે દૂર જતાં એક વનમાં અતિસાર રેણગી પીડાતા મંદ સ્વશ્રીતિ-બાળા એક સિદ્ધપુરુષને મેં ભક્તિથી સ્તન્ય કર્યા. એટલે તેણે સંતુષ્ટ થઈને મને

અમૃતીણું નામની વિદ્યા આપી, તેના પ્રમાણથી સર્વ દસ્તું નાદ્ય થાય છે. હું વિશાળાદ ! કદમ્પલતા સમાન એવિદ્યા પ્રાપ્ત કરી તે હિંડન રસ્થયુગદને નમીને દું અહીં પાછો આવ્યો. જેમ અદ્ધની શોલા વધંજન (લદ્દુ), દી છે અને અંગની શોલા ભૂમયુથી છે તેમ અન્ય સર્વ શુદ્ધા દાનવડે શોલે છે. ધર્માસર્વ શુદ્ધા તેના પરિવાર ઇપજ છે. દાનજ એક શ્રેષ્ઠ શુદ્ધ છે, તે વિના નાદ્દેર્દિક મનુષ્ય પણ ક્ષીર વિતાની સ્થળ ગાયની જેમ માનનિય થતો નથી. દેર્ઘ અને જૈર્યાદિક તો વ્યક્ત અને વરાહમાં પણ જેવામાં આવે છે. પરંતુ દાન (મહ) તો નાત મોટા ગણેદો-
ઝ હુદાય છે. ધન, શરીર અને પરિવાર વિગેરે સર્વ તો અતે નાદ્ય પાણે છે, પરંતુ દાનથી લગેલ કીર્તિ જગતમાં અચન રહે છે, વળી બુચ્યો ! કંપ્રેક કરવામાં તત્પર હોવાથી સસુર રસાતળમાં પેસતો જથી છે અને દાતા એવો નેદ સર્વની ઉપર આકાશમાં રહીને ગર્ભના કરે છે. તેજ ઠણ, તેજ વિદ્યા અને દેજ મતિ સંક્ષેળ છે કે જેનાથી અથી જેનાના મનોરથ પૂરી શકાય છે. આ પ્રમાણે વિચાર શ્રીને હેઠળણું કુમાર ! હું વિદ્યાના અળથી પ્રાણીઓને નિરંતર દાન આપું છું.” આ પ્રમાણીની તેની મધુર ગિરા સાંલળણીને સુભિત્રે આદરસ્પૂર્વક ઇદ્દું કે-“તમે એ વાહુજ સાર્થ કરો છો. અરેખર ! દાનથી તમે જગતને છાત્યા છો ? પછી પોતાના ભૂમિયી પ્રેરિત થયેલા કુમાર પુનઃ તેને પુછ્યું કે “હું લહ ! એ વિદ્યાનું તમે દાન કરી શકો કે નહિ ?” એ પ્રશ્ન સાંલળણીને તે આદ્યો કે-“ કે મનોરથને અતનાર કુમાર ! કેટલોક વખત પરીક્ષા કર્યા પછી એ અદ્ભુત વિદ્યાનું હું દાન આપી શકું ?” તેથે હિતર સાંલળણીને વિદ્યાનેના મનોરથ પૂર્ણારી તે વિદ્યા પ્રફુલ્લ કરવાની ધર્યાથી સુભિત્રેની અતુસા લધને સૂર તે વિદ્યાવાનની પાસે રહ્યો. આ પ્રમાણે કોકપાદો વિતાના દઈનીજેમ ચારે મિતોથી રહીત થઈને પોતાની દરવાર હુદાયમાં રાખી સુભિત્ર ચેકલો આગળ આવ્યો.

તમાલ, તાલ, હિંતાલ, આઅ, પીપલ, લક્ષ્મ, વડ અને હુંમરવૃષાથી આપ્ત એવા ગગનસ્પર્શીં પર્વતીથી, હુસ્તર નહીંઓથી, સિંહ, વાંધ, હાથી વિગેરે આપ-
દેથો અને ચાર, જળ તથા અગિનથી જ્ઞાનાદુલ તેમજ રાજપત્નીઓની જેમ નંબીં
રસાતલ અસૂર્યપશ્ય છે એવા ભયાનક જંગલમાં નિર્ણય થઈને ચાલોનો તે અહુ-
ગના સહાયથી સુઝે સુઝે તેને પેલેપાર પહોંચ્યો. ત્યાં ધનાઠય અલજો અને માહિરે-
વળું પરંતુ સુશ્રામ છતાં મનુષ્ય રહીત એવું એક નગર જેણું નેણું તેમાં પ્રવેશ
કર્યો. વિનમ્ય પૂર્વક જોતાં તેમાં અનેક હુદેલી અને પ્રાજ્ઞાદ વિદેશીની શોભા તેના
જેવામાં આવી, પણ એક પણ મનુષ્ય તેના જેવામાં ન આવ્યું. પછે તે સુરસ્ય રાજ
મંદિર પાસે આવ્યો. ત્યાં રાજમંદિરમાં હીંડાળા ઉપર એક પ્રાણી કોઢી તેના
જેવામાં આવી. તામજ ખીંતીપર જટાડતા અંજનથી પૂર્ણ અંજન આવ્યા હે

सुभिन्न चरित्र.

२३६

तु आ तेजे लेया. ए वे डैतुःथा एक तुंगासे उचारी तेमांनु अंजलि
तेजे ते भिक्षारीने आंन्द्रु, एटेवे ते तरतम् उपवत्ती कन्या गनी गई. ज्ञाक्षत्
शीरधारी भन्मय जेवा कुमारने जेहुने सनभां हुर्ष पामती ते कुमारीका चिंतन
दवा लावी के—‘अहो! आ कुमारना कैलिं पद्धति समान अरु अने सुडेमण
ओवा चरव्वा छे, नपउप दर्पणमां रघुरायमान कांतिमूँड रहेवा छे, हाथीनी सुंदर
जेवा भनोहर एना साथगो छे, एनो कटीतट सुंदर छे, एनी नालि जालीर छे
अने सुडीमां आवी शडे ओवा चिनारीयीमंडिन अने महु घोनो मध्यनाग छे. अहो!
एना विस्तीर्ण वक्षस्थगमां कुर्ही भाज्यनती भासिनी थयन कर्शे? अने आ दीर्घ
बुलांड डेना कंड साचे लागगो? अहो! शंख समान एना कंडकंदकमां नवु रेखा-
आ केनी थोसे छे? ज्ञेय अजेभर भने जेवाने हृदयमांथी अहार आव्वा छेय तेवा
विकुमना पर्षुसमान सुकांतिमान अने स्वच्छ एवा एना अधर आसे छे. अहो!
सरव अने रम्य एवा नासिका, दर्पण समान एना गाल, कशुंत पर्यंत पद्मोचिता
एना नेत्र, स्कंधने लागेका एना श्वव्युगव अने मस्ताकपर रहेवा अभर समान
डेयपाथ के ले अति कौमण, स्थान अने सुंदर मध्यूना कलाप लेयो छे. ए सर्व
अत्यंत सुंदर लागे छे. ए रीते सर्वविषय सुंदर ते कुमारने जेहुनि ते कुमारी चिन्त-
न्यस्तनी लेम निर्धारत थाए गई.

सुभिन्नकुमार पशु पर्यंकपर घडेवी ते स्वीने जेहुनि विचारवा लाव्यो के—‘अहो!
आ भिवाडीना भिषयी डोहि अे प्ररा अही आवी छे के शुं? अहो! एतुं उप,
एती दीक्षा अने सर्व अंगमां विवसित तथा लोचनप्रिय एतुं लावष्य, स्फर-
समान कुटिल एना डेश, कुचित समान तुञ्च एनो मध्य आग, सन्मनेरथ
समान हृदयपर ऊचा एना स्तनयुगव, सज्जनोनी चित्तवृत्ति लेवी सरव एमी ना-
सिका, प्रदंश एनो केशपाश, रागिज्वीना मननी लेवा स्तिर्व एनां दोयन, हुर्जनता
हृष्टेनी लेयो वह एनो कटाक्षपात, पकाथपत्रना लेयो सराग लेनो अपरपद्धति,
वर्षे जगतमां रहेवी खीओनो ज्ञेय ज्य कर्ये छेय तेम सूचवती गणापत्री
शय रेखाल्लो, शालिग्राम-सुवर्णी लेवुं एना शरीरतुं ज्ञेकुमारी, गतिशी
भंजुल अने रंभा (कडवी) ना स्तन्क समान एनी अंदा-ए सर्व अत्यंत सुंदर
छे. आ प्रभावे सर्वंगमुंदर ते सुंदरीने जेहुने अत्यंत गाठ अनुरागवाणी हृष्टि-
यी जेती एवी तेने कुमार कंठेना धृते छे, तेवाभां ते सुंदरी एवी के—‘तमे
डोयु ए? अने क्यांशी आयो छो?’ सुभिन्न एवाचो के ‘हुं क्षत्रिय कुं, अने इर हेथथी
आव्ययोगे अही आवी चल्यो कुं’

पछी सुभिन्न कुमारे मुन: तेने भधुर गिरायी पुछवुं के—‘के कुमारी! विधना
अलंकार समान आ नगर शून्य केम छे? अने पोताना स्वरूपथी लक्ष्मीने लुत-

३६८

त्रेता ऋर्षि प्रभाकरः

हार चीरी है मुझमें। तुं आ निर्मलुग नगरमा श्रीकृष्ण था भटे रहे क्यों? ऐरहे ने कन्या लोकी के “स्त्रीभावाभ्यन्नागर”। आ नगरमें अने भारी दृतांत मृण्यु सांशेन।

नगरदला शुश्रेष्ठी मुश्रोलित आ श्रीकृष्ण क नामे नगर हे, के वे वैतरेनी धूक्तव्याधी अने पोतानी श्रीभावी स्वर्गमें पशु विरस्कार करे हे। स्वदृप्थी मनम् धने कृतनार, शबुर्जीने परास्त कृतनार अने निर्लय एवो। श्री कनकधृष्ट नामे अहुं राज्ञ हूं। तेने सुवर्णस्मान वर्णवाणी कृतकृष्णजी नामे राज्ञी हूं, तेनी कुशिकी प्रियंगुभंजरी नामे हुं पुरी थई। बाल्यावस्थाधीन हुं मारा मा-आपते पोताना प्राणु कृतां पशु वधारे वद्वल छुती। अनुकृते सर्व कृष्णभावा कुशलाना मेषवीने हुं यौवन वय भामी।

त्रिं दिवस पूर्वसवना डैठ वैरी राक्षसे अहीं आवाने राज्ञ, अंतःपुर अमात्य अने सुशिर्हितनो वध कर्ये। आ लयांकर अनावधी अन्य लोटो गलशाधने आ नगरमें त्याग करी अन्यत्र पदायन हृषी गया, लेधी हे महाभाग। आ नगर समृद्ध छतां शून्य थए गयुं हे, ए अरसामां हुं पशुपदायन करती हूं, तेवामां भने पक्षीने ते अनुरागीये कृष्ण उे—‘हे लद्र! तुं वे पदायन करीथ, तो हुं तने मारी नांगीश, मारे तारे ज्वुं नहि अने मनमां कृष्ण लय पशु लावना नहि, सारे सुझूर्ने हुं आनंदपूर्वक तारी साथे लज्ज करीश’ एम इहीने मारी कृष्णा न होना छानं तेषु भने अगत्यारे अहीं साखी। त्यारी लयारे ते राक्षस गढार लय ते त्यारे तुंगडामां रडेला अंजनथी भने बीवाडी अनावी हे हे, अने पापो आवे हे त्यारे भीज तुंगडामां रडेला अंजनथी भने पापी मानुषी जननी हे हे। ए राते ते राक्षस ददर्योन दिवसे कृष्णक लय हे, अने राते पाडो आवे हे, हे लद्र। ए राते हुं अहिं दिवसे निर्गम्युं छुं।

एक दिवस मे ते राक्षसने पूछ्युं उे—‘हे लद्र! तमे हेव छो के भनुष्यी’ ते जोडो उे—‘हे कुद्दा! सांगण, वैत व्य पर्वतपर श्री भाण्यभाद्र नामना नगरमां चिवांगद नामे हुं चिवाधर राज्ञ हूं। स्थु हैवयोगे हुं मासाहारमां नहु आनन्दा अन्यै, म.रा हाथे कोइनोऽक्षय थतो नेहने मारा मानी अने साम-तोचे भने असेक रीने समग्रयो, छां दुर्भाग्यता तीव्र उद्ययो ते व्यजनोने हुं लही शउपो नहीं, तेथी तेमणे गलतारे भने राज्यश्वर कर्ये। सानानी दग्धी कृष्णके भसनी नथी, पछी पोताना स्थानथी लव धयेत हुं मानम् राक्षस थडो जर्व यूर्ध्वी उपर अमलु करो करो अहीं आवयो हुं।’ आ प्रभाष्ये ने राज्यमारी वात करे हे एवामां ते हुष राक्षसने हूरथी आवतो नेहने एकदम लय पामी ते लोकी हे—‘हे कुमार! तमे अहींधी सत्वर आव्या जाओ, केमडे ते हुष राक्षस आर्गेक भने परस्परवाने भाडे विवाहसामनी।

સુમિત્ર ચરિત્ર

૧૨૬

કથાને આકાશ માર્ગે શીવ અહૃતી આવે છે, આ પ્રમાણેનાં તેનાં વચન સાંભળીને કુમાર જરા હસીને યોવ્યો કે ‘હે અજ્ઞ અગણ ! તારું મન લખવામાં આંખું, તું તે યમ જેવા રાક્ષસનેજ વરવા ઈચ્છા છે, મને નહિં.’ એવું રાજાણાગ એક ઉડા નિસાસો નાખીને યોદી કે ‘હે મહુભાગ ! હું મંદ્બાળી આપ સરખા કિંમતી સત્તને કાયથી મેળાની શકું ?’ તે યોવ્યો કે ‘ને એમ હોય તેં મને કાંઈક તેના મર્મની વાત કહે કે જેથી એ તારા અકારણ વેરીનો હું નાશ કરે.’ આથી તે કન્યા હુંબિત થાઈને યોદી કે ‘બચોરના વખતે એ એક સુદૂર દેવના પ્રાનમાં લીન થાય છે, તે ગાવસર તેને મારવાનો છે, તે વિના એ નરરાક્ષસનો વધ થઈ શકે એમ નથી.’ કુમાર યોવ્યો ‘હે લદ ! આ તેં સુંકિત સારી અતાવી.’ એવું તે કન્યા યોદી કે ‘હે મહુભાગ ! હું બીજાનું તુંગામાંથી મને અંજન આંશુને બીજાંડી જનાની મૂડોં. અને તમે એક ખુલ્લામાં સંતાઠ જાઓ.’ પછી નેના કદ્યા પ્રમાણે કરીને કુમાર એકાંતમાં તરવાર લઈને બેચી રહ્યો. એવામાં ‘આડ આડ’ એપ વારવાર યોલોતો તે રાક્ષસ ત્યાં આવ્યો અને અંજનથી તે રાજભાગને બીજાનીનું ચારે તરફ નજર કરી યોવ્યો કે— ‘હે પિયા ! આજે અહીં મતુષ્ણની ગંધ આવે છે, તે યોદી કે— એરારે તો હું અહીં મતુષ્ણ હું, માટે તમને ઇથે તેમ કરો તમને ડોલું અટકાવનાર છે.’

પછી નિવાહુસમયી એક બાળું ‘મૂડી પવિત્ર થધ દીઢ્ટેવની પૂલ કરીને તે રાક્ષસ ક્ષયુતર ધ્યાનમાં લીન થયો. એવું શુદ્ધામંશી લેમ જિંહ અહૃત નીકળે તેમ ચણકતી વીજળી સમાન તરવાર ઉગામીને કુમાર પ્રગત થયો અને દ્વાર આગળ ઉલ્લો રહ્યો યોવ્યો કે— ‘અરે પાપિષ ! હું મારી પાસેથી તુ કથાં જવાનો છે ? રાજલિંગેદિનાં ચિંતામણુ અમાન લુચિતનું ને તે હરથુ કર્યું છે, તે પાપનું તરવારથી હું તને પ્રાયશ્ક્રિત આપું છું.’ એવું એ ધરી એકાત્મક ધ્યાન ધરી હાથમાં યમની શુદ્ધા અસ્તન ધરી લઈને તે રાક્ષસ કુમારની સાથે આંધ્યો, પરંતુ કુમારે સમય સાધીને કદલીદાંડની લેમ તેનું ધિર છેદી નાંખ્યું. એ શરે પ્રગત પુષ્યના પ્રલાઘથી રાજાણાળાનું રક્ષણ ઇરાનાં તે રાજકુમાર જગતમાં પ્રશ્ન-સનીય અથવા જ્યાને પાંચ્યો. પછી અતુરાગના વશથી રાક્ષસે લાવેકી નિવાહ-સામગ્રીને સુમિત્રકુમાર તે રાજકન્યાને પરાયો.

॥ ઇતિ શ્રી હર્ષકુજરોશાધ્યાયવિરાચિતે દાનરત્નોપાલ્યાને શ્રી સુમિત્રચરિત્રે
સુમિત્રજન્મ પરદેશગમન પાણિગ્રહણવર્ણનો નામ પ્રથમઃ પ્રસ્તવઃ ॥



એક ગુરૂજા કલેખપુરુષનો રવાર્ગવાજ.

જૈન વર્ગમાં ચુપ્રસિદ્ધ તેમનું રાજમાન્ય અને કલકત્તા વિગેરે શહેરોમાં પ્રાભ્યાતિ પાણેથા આખુસાહેબ રાય બદ્રીદામજ સુરીમ અહાદુર કિલીય લાદાવદ વહીર સેમવારની સાંને પુછ કલાકે કલકત્તામાં સમાધિપૂર્વક દેહસુક્ત થયા હે, માન્ન ૮-૧૦ દિવસના સામાન્ય વ્યાધિમાં હેઠ એડી દીપો છે. જૈનરીતિ અનુસાર વહી ર કે જાંથરો અદ્ધુદ્ધ કર્યો હતો અને સાગારી અદ્ધુસથ્ય કર્યું હતું. અતિ વૃદ્ધનથ થયા છતાં માંત સમય લાગ્યાની અને ધર્મચુસ્ત જે નોંધ આવો સુધરે છે. આ લાગ્યાશાળી પુરુષનો જન્મ સંવત્ ૧૮૮૮ ના માગશર શુદ્ધ ૧૧ શે થયો હતો. કેથી અંત સમયે તેમને ટ્યુ ચું વર્ષ વ્યતિત થતું હતું. આટકી વૃદ્ધનથ છતાં શરીર નિરોગી ઢાના સાથે સર્વ કાર્યમાં સમર્થ હતું, તેજ તેમણે પૂર્વે હ્યા પાણ્યાની સાણીતી છે. એમણે પોતાની લાંઘીમાં પરમાર્થનાં કાર્યો અનેક રીત્યો છે, રાજ્ય તરફથી અપૂર્વ માન મેળવ્યું છે, અનેચાતના વ્યાપારને પુષ્ટા દ્વય સંપાદન કર્યું છે અને અનેક જનોની ઉપર ઉપકાર કર્યો છે. સંમેતશિખરાહિ તીર્થને માટે પારાનાર પ્રયત્ન કર્યો છે અને દરદોજની રહેણી કરણી એવી કાર્તમ રાખી છે કે કે અન્ય મનુષ્યોને અનુકરણું કરવા ચો઱્ય છે. તેમના ચદ્રિત્રતુ સાચાત વર્ષુન આપતાં ધર્મ વિસ્તાર થાય તેમ હેઠાંથી અત્ર આપી શકતા નથી, તોપણું હુકમાં આપીએ છીએ.

એમના વહીનો પ્રથમ દીદીલીમાં ને પણી લાખનઉમાં રહેતા હતા. એચો જન્મપત્રંથી શ્રીમાળ જિંધાર ગોગ્રી હતા અને જૈન ધ્યેનાં ૧૨ અરતર ગણી હતા. એમના વહીનો કલનજ વિગેરેમાં અનેક જીવનિયાની પ્રચ્છિયો કરીછે. આખુસાહેબ પોતે પેતાના ગળીયામાં એક એતું સુદર આરીસામુખનાણું જિનમાં હિંદુ સંવત્ ૧૬૨૩માં ગંધાર્યું છે કે જેલવાને માટે સ્વદેશી ઉપરાંત પરદેશી પણ ઘણું મનુષ્યો દરદોજ આવે છે. એ મંદિરમાં ખર્ચ પણ પુષ્ટા કર્યો છે. લાદા બલાદમાં એમના નિવાસસ્થળ સુરીમાનિવાસમાં એક ચુહદેશાસ્તર પથ અહુજ સુંદર કર્યું છે, તેમાં માલિકદ્ય, નીવમ વિગેરેની અસુધ્ય પ્રતિમાએ છે. આખુસાહેબ પ્રમાતના એ પણોરનો લખન એ મંદિરમાં પુજન જાપ વિગેર કરવામાંજ વર્તતત કરતા હતા. અને દરદોજ સંધ્યા સમયે ગળીયાના જિનમાંહિદે જરૂને લાભિત કરતા હતા. આદયોઽય સર્વ પ્રકારના કલ નિયમો એમણે અગિકાર કરેલા હતા. સંવત્ ૧૬૪૮ માં મુખ્યમાં ચુનિરાજ શ્રી મોળનલાલજમહારાજ કમસ એમણે બાર

શ્રીક શુદ્ધજી મહાપુરુષનો જયંતિ

૨૫૩

મત ગર્વિકાર ર્થી હતા અને ચતુર્થ ક્રત સરદારી આહુણ કર્યું હતું. ૫૦ વર્ષથી સર્વો
એ ચૌખિડાર કરતા હતા કે કેનો પ્રાંત નાનથ પર્યાત ત્યાગ કર્યો ન હતો.

એમણે સર્વ દ્વયસંપત્તિ ને શીર્જી સ્વનૃહસ્તે સંપાદન કરી હતી. કારબુકે એ-
મના સુઅધ વડીલેનો એમની અહુ નાની ર્થમાં અમાન થયેદો હોનો. એમને ત્યાં
કૃદુંંક એલ્યું ઉમા જૈયાત છે કે લે જેવાને અનેક યુરોપીયનો પણ આવેછે. એમ-
ના જાયેદાનમાં એક છયાપતિ ભાણેદ જેણે શહેરનશાહ સર્વતમ શોડવર્ડ પણ
બહુજ પ્રસ્તુત થયા હતા. એમનું જૈયાત ઘણું પ્રદર્શનેનાં મુક્કવામાં આચુંછે અને
ત્યાંથી તેમને સુઅધ મેડલો. મળેલા છે. એમને ચાં. ૧૬૨૮માં સરકારી અવેરીની,
સંવત ૧૬૨૭ માં સુડીમની અને સંવત ૧૬૨૮ માં સુડીમ એન્ડ ટેર્ન જે-
ક્ષરની ઉપાધિ બુદ્ધ બુદ્ધ વાઇકિરથો તરફથી મળેલી છે. ઉપરાંત દીવીદરબારમાં
દોઈ લીટન તરફથી રાયઅહારુદ્દીની પડી અને એન્ડ્રેસ એફ ઈંડીયને મિહલ
મળેલો છે. રાયઅહારી હેઠે હરાયારીમાં તેમને આમંત્રણ આપવામાં આણતું હતું
અને સરકારી પ્રાહુણ્ણ તરીકે તેમનું સન્માન લગવવામાં આવતું હતું.

સંવત ૧૬૨૧ માં અવસર નરીઓ એમને હાથી, ગામ અને પાવખો વિનોર
આધીને તેમનું સન્માન કર્યું હતું. તે તમામ વસ્તુઓ તેમણે શુલ કર્યામાં અર્થાં
કરી રીથી હતી અને ગામ કલકત્તાના માર્ટિરમાં લેટ આપી પોતાતું નામ અમર કર્યું
હતું. પગમાં સોતું પહેંચવાતું હચ્ચે જન્માન પણ તેમને હાઇટીરાજ તરફથી મળેલું
હતું. અર્થાત અંક પ્રકારના જન્માનથી તેઓ નિયુંષિત થયેલા હતા.

શ્રી સર્વેતશિખરલુ ઉપર એમણે એક ધારું સુદર મંહિર મોટા ખર્ચથી
ખર્ચાંધું છે. જેણું કામ ૧૮ વર્ષે પૂર્ણ થયું હતું. તેની અંદર હાત શ્રી પાર્વતનાથ
પ્રમુની પાડુકા પદ્ધરાંબેલ છે.

કલકત્તામાં પાંજરાપોળાના સ્થાપક પણ પ્રથમ એજ મહાપુરુષ હતા. હાજ
એ પાંજરાપોળ વાર્ચિક એક લાખ ઢીરાના અર્થે ચાલે છે. બીજી જૈતાંસથરં
કોન્ફરન્સ સુંઅધમાં મંણી ત્યારે તેના એઓ સાહેં પ્રમુખ થયેલા હતા. જે વખતે
રૂપીયાનાં તો વરસાદ વરસ્યો હતો. દોડ આણું હલ્લ કલદાસુલના એઓ પ્રતિ-
નિધિ હતા અને રાયાપા બદદ ૪૦ વર્ષ માટે રૂ. ૧૫૦૦૦) નો પ્રતિઅધિકરણના.
કાર્યમાં એમણે અચ ભાગ લીધો હતો. હૈન શ્રેષ્ઠસ્કર મંડળના એઓ માનનીય
પ્રમુખ હતા. જૈન એસોલાંચેશન એફ ઈંડીયાના એઓ સ્થાપક હતા અને
પ્રદાનમાં એની વૃદ્ધિને માટે સુઅધ રહીને એમણે સારો પ્રથતિ કર્યો હતો. કલકત્તાની
પ્રતિદ્વદ્ધ અંગાળ નેશનાન ચેમ્બર એફ કોમર્સની સ્થાપના વખતે પ્રથમ તેઓ
નિયુંષિત (પ્રમુખ) તરીકે ચુટાયા હતા, ધર્મિક તેમજ સાર્વજનિક અનેક સ-

४२५

कैवल्य पर्व ग्रन्थः

- स्थायीमां तेऽपि रोप्यते मन अवश्यत्वे काम करनारा हेताथी निरंतर प्रवृत्ति-परायने रुक्षा हुता।

श्री चंद्रेश्विधिपर उपर अथेषु सुरासी अर्द्धीनुं कारणातुं कठावामां तेमन् ते तीर्थस्थानपर शुद्धार्थीयनोने इवा आना माटे अधाता अगत्यायो अटकान्नामां अभेदे तन, मन, धनदी प्रयास करी इत्तेहमन्ती मेणी हुती। संमेतशिष्णाण्ण तीर्थ-पर रुक्षा आपणा हुक्के संलग्नावाने माटे अयो छाहगीना मांत आगचुपी प्रयत्नशील रथ्या हुता, ए कार्यपरत्वे दो अमना जनाथी मेणी आमी पडी छे, परंतु अमना सुपुत्रो बाषुसाङ्कु रायकुमारसिंहशु अने राजकुमारर्जुनांहु योताना पिताशीने पगावे यादी ए आमी जनुवा नही आपे अवी आशा आयी शक्य छे।

ज्ञवाता ज्ञावरोपर डाक्टरी अज्ञमाप्यस करी तेने निर्धारिताथी भासवनी वीवीसेंक्षत सोसाईटी कठकत्तामां स्थपानानी हुती, तेने अंध रथावामा माटे तेमन्ये अत्यंत परिश्रम कर्ये हुतो अनेतेने परिश्रमे तेनी स्थापना अंध रथी हुती। हालमां याकाता महान् विश्वकुरी अद्वयवनाग्रुने आवेला मनुष्यानी सहाय करवा माटे तेमना प्रमुखप्रणा नीवेन अठामन्नरामां मेणी कला भणी हुती अने सारी रकमनी सहायता आपणामां आवी हुती।

अमनी यासेशी अवेशाती कणा शीधीने सुमारे सो जैन अधुयो सारा प्रभ्यात अवेदीया यथा छे अने अत्यारे मेणी कमाण्णी करे छे।

पारमार्थिक धार्यीमां अभेदे पोतानी छाहगीमां पुष्टण द्रव्यनो व्यय कर्ये छे। तेनी एकांहर चंद्र्या माणी शक्ती नदी। अंत समये पछु अभेदे अद्वाय दृष्टिअनी कठम शातिहितना कार्यीमां तेमन धार्मिक कार्यीमां व्यय करवा माटे अलग काढेवी छे। अंतसमये तेमना ए पुत्रो, ७ घोन्नो अने २ घोन्नोयो तेमन ६ प्रपोन्नो विगेठ सर्वे हुक्कुंभ तेमनी समिपेन्न रुक्षुं हुतुं अने तेमनी अर्थात् सेवा करतुं हुतुं।

तेमन्ये देह एकज्ञा पणी तेमना देहेने सुदृविभान (भांडवी) मां ऐसाती ऐन्द वाज विगेठ धामधुम साथे तेमन आगाम, पुण्ये अने द्रव्यती वृष्टि करता सरकारनी आस महेन्द्रगामीथी तेमना आगनी नलुक्कामां शहेन्द्रना मध्यमांधकु मान साथे अजिन-संस्कार करवामां अव्यो हुतो। तेमना मानमां कठकत्ताना अनेक ५ तरो अंध रथ्या हुता। अहारगाम तारद्वारा ते अगर इवातां धर्मी दिलगीरी इवार्थ हुती अने अनेक गामो तेमन शहेन्द्रमां तेमना मानमी आतर अन्तरे अंध राख्या विगेठ हीडित ३०नी हुती अने डेटलाक धर्मियों करवामां आव्या हुता। अनेक जैन संस्थायोंमे तेमना मानमां एकन थै एटर्थिक तारो कर्या हुता। नामदार तेक्षसराय तेमन्ये